मुण्डकोपनिषद्

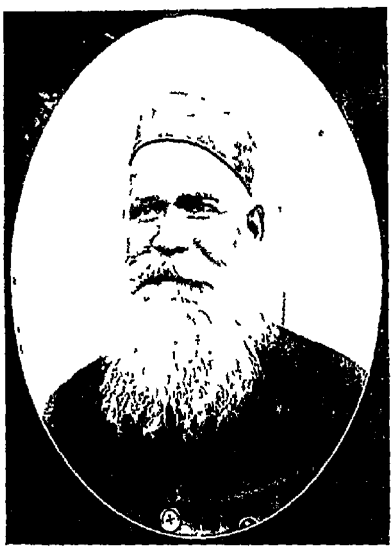
अनुवादक—

रायबहादुर बाबू ज़ालिमसिंह

केसरीदास सेठ सुपरिंटेंडेंट
नवलकिशोर प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित
सन् १९२३ ई०

दूसरी बार

लखनऊ



रायबहादुर बाबू जालिमसिंह

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथादौ मङ्गलाचरणम् ॥

वन्दे शैलसुतापतिम्भयहरं मोक्षप्रदं प्राणिनां
मोहध्वान्तसमूहभञ्जनविधौ प्राभास्करं चान्वहम् ।
यद्बोधोदयमात्रतः प्रविलयं विघ्नस्य शैलव्रजा
यान्त्येवाखिलसिद्धयः प्रतिदिनं चाद्यन्तहीनं परम् ॥ १ ॥
यन्ध्यायन्ति मुनीश्वराः प्रतिदिनं संयम्य सर्वेन्द्रिया-
ण्यर्वाकृतीर्थजलाभिषिक्तशिरसो नित्यक्रियानिर्वृताः ।
षट्चक्रादिविचारसारकुशला नन्दन्ति योगीश्वराः
तं वन्दे परमात्मरूपमनघं विश्वेश्वरं ज्ञानदम् ॥ २ ॥

दो० करौं वन्दना ब्रह्मको, जो अनन्त निजरूप ।
जेहि जाने जगभ्रम सकल, मिटै अन्धतम कूप ॥
नाम रूप जामें नहीं, नहीं जाति अरु भेद ।
सो मैं पूरण ब्रह्म हूं, रहित त्रिविध परिछेद ॥
ब्रह्मभाग जो उपनिषद, ताका करूं विचार ।
भाषा में तिस अर्थ को, लखै सकल संसार ॥
सन्तसंग से जो लख्यो, सो मैं करूं वखान ।
परमानन्द सहाय तें, जाने सकल जहान ॥
पुरी अयोध्या के निकट, अकबरपुर है गांव ।
जन्मभूमि मम जान तू, जालिमसिंहहि नांव ॥

यह संसार असार महाअपार समुद्र है इसके पार होने के लिये उपनिषत् अद्भुत अलौकिक अद्वितीय नौका है जिसमें बैठकर असंख्य

सज्जन मुमुक्षुजन विना प्रयास ही ऐसे दुस्तर सागर के पार होगये हैं और होते जाते हैं और भविष्यत्काल में होंगे जो मुमुक्षुजन हैं उनके हितार्थ यह भाषाटीका रचीगई है । इस टीका में पहिले मूलमन्त्र है फिर पदच्छेद है फिर वामहस्त की ओर संस्कृत अन्वय दिया है और दक्षिण हस्तकी ओर पदार्थ सहित भाषार्थ लिखा है। यदि वाम तरफ़ का लिखा हुआ ऊपर से नीचे तक पढ़ाजावे तो उत्तम संस्कृत मिलेगा और यदि दक्षिण हस्त के तरफ़वाला पढ़ाजावे तो पूरा अर्थ मन्त्र का मध्यदेशीय भाषा में मिलेगा और यदि बायें तरफ़ से दहिने तरफ़ को पढ़ाजावे तो हरएक संस्कृत पदका अर्थ भाषा में मिलेगा जहांतक होसका है प्रत्येक संस्कृत पदका अर्थ विभक्तिके अनुसार लिखागया है इस टीकाके पढ़ने से संस्कृत विद्याका भी अभ्यास होगा। इस टीका में मूलका कोई शब्द छूटने नहीं पाया है और मन्त्रका पूरा पूरा अर्थ उसी के शब्दों ही से सिद्ध किया गया है । अपनी कल्पना कुछ नहीं की गई है, हां कहीं कहीं ऊपर से संस्कृत पद मन्त्र के अर्थ स्पष्ट करने के लिये रखागया है और उस पदके प्रथम यह + चिह्न लगा दिया गया है ताकि पाठक जनों को विदित होजावे कि यह पद मूलका नहीं है । इस टीकाको बाबू ज़ालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर ज़िला फैज़ाबाद हेड पोस्टमास्टर नैनीताल सहित अत्यन्त सहायता पण्डित गंगादत्त ज्योतिर्विद निवासी मुरादाबादाभिधपत्तन और पण्डित रामदत्त ज्योतिर्विद निवासी अल्मोड़ाख्य नगर के रचकर शुद्ध निर्मल हृदयाकाशवान् पुरुषों के चरणकमल में अर्पण करता है और आशा रखता है कि जहां कहीं अशुद्धता हो उसे टीकाकर्त्ता को सूचना करें ताकि अशुद्धता दूर होजावे ।

मुण्डकोपनिषदि

शान्तिपाठः ।

मूलम् ।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ १ ॥

पदच्छेदः ।

स्वस्ति, नः, इन्द्रः, वृद्धश्रवाः, स्वस्ति, नः, पूषा, विश्ववेदाः, स्वस्ति, नः, तार्क्ष्यः, अरिष्टनेमिः, स्वस्ति, नः, बृहस्पतिः, दधातु ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
वृद्धश्रवाः	बड़ी है कीर्त्ति जिसकी
इन्द्रः	ऐसा इन्द्र देवराज
नः	हमारे लिये
स्वस्ति	अविनाशी सुखको
दधातु	देवै
+ च	और
विश्ववेदाः	विश्वकाजाननेवाला याने विश्व का प्रकाशक
पूषा	सूर्य देवता
नः	हमारे अर्थ
स्वस्ति	कल्याण को
+ दधातु	देवै
+ च	और
अरिष्टनेमिः	कल्याणोंसे परिपूर्ण
तार्क्ष्यः	गरुड़
नः	हमारे लिये
स्वस्ति	कल्याण को
+ दधातु	देवै
+ च	और
बृहस्पतिः	बृहस्पति देवगुरु
नः	हमारे लिये
स्वस्ति	कल्याण को
+ दधातु	देवै

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः=हमारे तापत्रयों की शान्ति होवै ॥

अथ अथर्ववेदीयमुण्डकोपनिषद् ॥

मूलम् ।

ब्रह्मा देवानां प्रथमः संबभूव विश्वस्य कर्त्ता भुवनस्य गोप्ता स ब्रह्मविद्यां सर्वविद्याप्रतिष्ठामथर्वाय ज्येष्ठपुत्राय प्राह ॥ १ ॥

पदच्छेदः ।

ब्रह्मा, देवानाम्, प्रथमः, संबभूव, विश्वस्य, कर्त्ता, भुवनस्य, गोप्ता, सः, ब्रह्मविद्याम्, सर्वविद्याप्रतिष्ठाम्, अथर्वाय, ज्येष्ठपुत्राय, प्राह ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
विश्वस्य	सब सृष्टि का
कर्त्ता	कर्त्ता
भुवनस्य	जगत् का
गोप्ता	रक्षक
देवानाम्	इन्द्रादि देवतों में
प्रथमः	प्रधान
ब्रह्मा	धर्म ज्ञान वैराग्य ऐश्वर्यकरके संपन्न हिरण्यगर्भ ब्रह्मा
संबभूव	उत्पन्न होता भया
सः	सोई
सर्वविद्या प्रतिष्ठाम्	सर्वविद्याओं में उत्तम
ब्रह्मविद्याम्	आत्मविद्याको
ज्येष्ठपुत्राय	अपने ज्येष्ठ पुत्र
अथर्वाय	अथर्वानामक ऋषि से
प्राह	भलीप्रकार कहता भया

मूलम् ।

अथर्वणे यां प्रवदेत ब्रह्माऽथर्वा तां पुरोवाचाङ्गिरे ब्रह्मविद्याम् स भारद्वाजाय सत्यवाहाय प्राह भारद्वाजोऽङ्गिरसे परावराम् ॥ २ ॥

पदच्छेदः ।

अथर्वणे, याम्, प्रवदेत, ब्रह्मा, अथर्वा, ताम्, पुरा, उवाच, अङ्गिरे, ब्रह्मविद्याम्, सः, भारद्वाजाय, सत्यवाहाय, प्राह, भारद्वाजः, अङ्गिरसे, परावराम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
याम्	जिस आत्मविद्याको
ब्रह्मा	ब्रह्मा
अथर्वणे	अथर्वा नामक ऋषि से
पुरा	पहिले
प्रवदेत	कहताभया
ताम्	उसी
ब्रह्मविद्याम्	ब्रह्मविद्या को
अथर्वा	अथर्वा ऋषि
अंगिरे	अंगिरमुनिसे
उवाच	कहता भया
+ च	और
सः	वह अंगिरमुनि
भारद्वाजाय	भरद्वाजगोत्र विषे उत्पन्नहुये
सत्यवाहाय	सत्यवाह नामक ऋषिसे
प्राह	कहताभया
इति	इसप्रकार
परावराम्	ब्रह्माआदिकोंसे चली आई हुई आत्मविद्याको
भारद्वाजः	भरद्वाज गोत्र विषे उत्पन्नहुआ सत्यवाह नामक ऋषि
अंगिरसे	अंगिरामुनिसे
प्राह	कहताभया

मूलम् ।

शौनको ह वै महाशालोऽङ्गिरसं विधिवदुपसन्नः पप्रच्छ कस्मिन्नु भगवो विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवतीति ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ।

शौनकः, ह, वै, महाशालः, अंगिरसम्, विधिवत्, उपसन्नः, पप्रच्छ, कस्मिन्, नु, भगवः, विज्ञाते, सर्वम्, इदम्, विज्ञातम्, भवति, इति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ह वै	प्रसिद्ध
महाशालः	धन कुल विद्यादि संपन्न श्रेष्ठगृहस्थाश्रमका धारण करने वाला
शौनकः	शुनक ऋषि का पुत्र शौनक
विधिवत्	यथाविधि याने गुरु शिष्यभाव से
अङ्गिरसम्	अंगिरा मुनि के

उपसन्नः=समीप जाकर	इदम्=सब कार्य कारण का विवेक
इति=ऐसा	विज्ञातम्=भली प्रकार जाना हुआ
नु पप्रच्छ=पूछताभया कि	भवति=होता है
भगवः=हे भगवन्	
कस्मिन्=किस एकके	
विज्ञाते=विशेष करके जाननेपर	

मूलम् ।

तस्मै स होवाच द्वे विद्ये वेदितव्य इति ह स्म यद्ब्रह्मविदो वदन्ति परा चैवापरा च ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ।

तस्मै, सः, ह, उवाच, द्वे, विद्ये, वेदितव्ये, इति, ह, स्म, यत्, ब्रह्मविदः, वदन्ति, परा, च, एव, अपरा, च ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तस्मै=उस शौनक मुनिसे		+ यत्=जो	
ह=विचार करके		अपरा च एव=अपरा विद्या है	
सः=वह अंगिरा ऋषि		द्वे विद्ये=ये दोनों विद्या	
उवाच=कहता भया कि		वेदितव्ये=जानने योग्य हैं	
ह=हे सौम्य		इति=ऐसा	
यत्=जो		ब्रह्म=ब्रह्मवेत्ता लोक	
परा=परा विद्या है		वदन्तिस्म=कहते भये	
च=और			

मूलम् ।

तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषमिति अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ।

तत्र, अपरा, ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः, अथर्ववेदः शिक्षा, कल्पः, व्याकरणम्, निरुक्तम्, छन्दः, ज्योतिषम्, इति, अथ, परा, यया, तत्, अक्षरम्, अधिगम्यते ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तत्र=	पूर्वोक्त दोनों विद्याओं में से
ऋग्वेदः=	ऋग्वेद
यजुर्वेदः=	यजुर्वेद
सामवेदः=	सामवेद
अथर्ववेदः=	अथर्ववेद
शिक्षा=	शिक्षा (इस में अक्षरों की उत्पत्ति के स्थान और स्वर आदि-कों के उच्चारण का विवेक है कर्त्ता इसके पाणिनि मुनि हैं)
कल्पः=	विधिसूत्र (इस में गर्भाधान आदि संस्कारों की और अग्नि-होत्रादि कर्मों की कर्त्तव्यता है कर्त्ता इसके कात्यायन मुनि हैं)
व्याकरणम्=	व्याकरण (इस में धातु प्रत्यय आदि शब्दों का विवेक है कर्त्ता इसके पाणिनि मुनि हैं)

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
निरुक्तम्=	निरुक्त (इस में वैदिक और लौकिक शब्दों का और लिंगों का विवेक है कर्त्ता इस के यास्कमुनि हैं)
छन्दः=	छंद (इस में गायत्री आदि छन्दों का विवेक है कर्त्ता-इस के शेष नाग हैं)
ज्योतिषम्=	ज्योतिष (इस में सूर्य चन्द्रमा आदि ज्योतिश्चक्र गतिद्वारा कालका ज्ञान है कर्त्ता इस के सूर्य भगवान् और गर्गमुनि हैं)
इति=	यह सब
अपरा=	अपरा विद्या है
अथ=	और
यया=	जिस विद्या द्वारा
तत्=	वह वेदांतप्रतिपाद्य

अक्षरम्=अविनाशी परब्रह्म (जिसका व्याख्यानअगले मंत्र विषे है) | अधिगम्यते=पाया जाता है + सा=वह परा=परा विद्या है ।

मूलम् ।

यत्तदद्रेश्यमग्राह्यमगोत्रमवर्णमचक्षुः श्रोत्रं तदपाणिपादम् । नित्यं विभुं सर्वगतं सुसूक्ष्मं तदव्ययं यद्भूतयोनिं परिपश्यन्ति धीराः ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ।

यत्, तत्, अद्रेश्यम्, अग्राह्यम्, अगोत्रम्, अवर्णम्, अचक्षुः, श्रोत्रम्, तत्, अपाणिपादम्, नित्यम्, विभुम्, सर्वगतम्, सुसूक्ष्मम्, तत्, अव्ययम्, यत्, भूतयोनिम्, परिपश्यन्ति, धीराः ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

यत्=जो
तत्=वह
अद्रेश्यम्=ज्ञानेन्द्रियों का अविषय है
अग्राह्यम्=कर्मेन्द्रियों करके अगृहीत है
अगोत्रम्=मूल कारणरहित है
अवर्णम्=नीलपीतादि वर्ण रहित अथवा ब्राह्मणादि जाति रहित है
अचक्षुः श्रोत्रम्=चक्षु श्रोत्रादि ज्ञान इन्द्रिय रहित है
अपाणिपादम्=हस्त पादादि कर्मेन्द्रिय रहित है
नित्यम्=अविनाशी है

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

विभूम्=ब्रह्मा से स्थावर पर्यंत सर्वव्यापी है
च=और
सुसूक्ष्मम्=आकाशवत् अतिसूक्ष्म है
सर्वगतम्=सब में अनुगत
अतः=इसलिये
तत्=वह
अव्ययम्=सदा एकरूप नाशरहित है
यत्=जिसको
धीराः=विवेकी पुरुष
भूतयोनिम्=भूतादिकों का कारण
ज्ञात्वा=जान करके
परिपश्यन्ति=सर्व ओर से देखते हैं

मूलम् ।

यथोर्णनाभिः सृजते गृह्णते च यथा पृथिव्यामोषधयः संभवन्ति यथा सतः पुरुषात्केशलोमानि तथाऽक्षरात्संभवतीह विश्वम्॥ ७॥

पदच्छेदः ।

यथा, ऊर्णनाभिः, सृजते, गृह्णते, च, यथा, पृथिव्याम्, ओषधयः, सम्भवन्ति, यथा, सतः, पुरुषात्, केशलोमानि, तथा, अक्षरात्, सम्भवति, इह, विश्वम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यथा	जैसे
ऊर्णनाभिः	मकड़ी
सृजते	अपनी इच्छा से नाभिस्थित सूत्र जालको बाहर निकालकर विस्तार करती है
च	और फिर
गृह्णते	स्वइच्छासे ग्रहणकरतीहै यानी उदर गत कर लेती है
च	और
यथा	जैसे
पृथिव्याम्	पृथिवी विषे
ओषधयः	अन्नादि सब औषधियां
सम्भवन्ति	उत्पन्न होती हैं और पुनः उसी में लीनहोजातीहैं
च	और
यथा	जैसे
सतः पुरुषात्	जीवित पुरुष से
केशलोमानि	केश और लोम
सम्भवन्ति	उत्पन्न होते हैं
तथा	वैसे ही
इह	इस संसार मंडल विषे
विश्वम्	समस्त जगत्
अक्षरात्	पूर्वोक्त अविनाशी परमात्मा से
संभवति	ऊपर कहे हुये दृष्टान्तों के अनुसार उत्पन्न होता है और उसी आत्मा में फिर लय होता है

मूलम् ।

तपसा चीयते ब्रह्म ततोऽन्नमभिजायते अन्नात्प्राणो मनः सत्यं लोकाः कर्मसु चामृतम् ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ।

तपसा, चीयते, ब्रह्म, ततः, अन्नम्, अभिजायते, अन्नात्, प्राणः, मनः, सत्यम्, लोकाः, कर्मसु, च, अमृतम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+ यदा	जब
+ पूर्वम्	प्रथम
ब्रह्म	परब्रह्म
तपसा	सृष्टिविषयक ज्ञान शक्ति करके
चीयते	स्थूलता को प्राप्त होता है याने बीजवत् अंकुरित होने को गर्भित होता है
+ तदा	तब
ततः	उस ब्रह्म से
अन्नम्	अव्याकृत याने प्रकृति
अभिजायते	उत्पन्न होती है
अन्नात्	अव्याकृत से
प्राणः	सूत्रात्माहिरण्यगर्भ
अभिजायते	उत्पन्न होता है
प्राणात्	सूत्रात्मा हिरण्यगर्भ से
मनः	संकल्पविकल्परूप मन
अभिजायते	उत्पन्न होता है
मनसः	मनसे
सत्यम्	पंचसृष्टि पूर्वक आकाशादि पञ्चक
अभिजायते	उत्पन्न होता है
+ सत्यात्	आकाशादि पञ्चक से
लोकाः	भूरादि सप्त लोक
अभिजायन्ते	उत्पन्न होते हैं
लोकेषु	लोकों के विषे
कर्माणि	वर्णाश्रमों के कर्म
अभिजायन्ते	उत्पन्न होते हैं
च	और
कर्मसु	कर्मों के विषे
अमृतम्	अविनाश कर्म फल
अभिजायते	उत्पन्न होता है

मूलम् ।

यः सर्वज्ञः सर्वविद्यस्य ज्ञानमयं तपः तस्मादेतद्ब्रह्मनामरूपमन्नं च जायते ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ।

यः, सर्वज्ञः, सर्ववित्, यस्य, ज्ञानमयम्, तपः, तस्मात्, एतत्, ब्रह्म, नाम, रूपम्, अन्नम्, च, जायते ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यः	जो पूर्वोक्त लक्षण वाला परमात्मा	तस्मात्	उससे
सर्वज्ञः	सामान्यता से सब का जाननेवाला है	एतत्	यह सृष्टिका उपादानकारण
+ च	और	ब्रह्म	हिरण्यगर्भ
सर्ववित्	विशेषता से सबका ज्ञाता है	च	और
च	और	नाम	नाम
यस्य	जिसका	रूपम्	रूप
ज्ञानमयम्	ज्ञान से परिपूर्ण	च	और
तपः	सृष्टिविषयक विचार है	अन्नम्	भोग्यवस्तु
		जायते	सब उत्पन्न होता है

इति प्रथममुण्डके प्रथमः खण्डः ॥

मूलम् ।

तदेतत्सत्यं मंत्रेषु कर्माणि कवयो यान्यपश्यंस्तानि त्रेतायां बहुधा संततानि तान्याचरथ नियतं सत्यकामा एष वः पन्थाः स्वकृतस्य लोके ॥ १ ॥

पदच्छेदः ।

तत्, एतत्, सत्यम्, मन्त्रेषु, कर्म्माणि, कवयः, यानि, अपश्यन्, तानि, त्रेतायाम्, बहुधा, सन्ततानि, तानि, आचरथ, नियतं, सत्यकामाः, एषः, वः, पन्थाः, स्वकृतस्य, लोके ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
हे शिष्याः	हे शिष्यो	त्रेतायाम्	वेदत्रयविषे
कवयः	वसिष्ठादि महर्षीश्वर	बहुधा	अनेक प्रकार से
मन्त्रेषु	अपर विद्याके मन्त्रों विषे	सन्ततानि	प्रवृत्त हैं
यानि	जिन	+ भूयम्	पुनर्लोक
कर्माणि	अग्निहोत्रादि कर्मों को	सत्यकामाः	यथायोग्य फलकी कामनावाले
अपश्यन्	देखतेभये याने अनुष्ठान करते भये	तानि	उन कर्मों को
तत्	वह	नियतम्	नित्य
एतत्	यह अग्निहोत्रादि कर्मों का अनुष्ठान	आचरथ	अनुष्ठान करो
सत्यम्	स्वर्ग फल का साधन है	+ हि	क्योंकि
च	और	स्वकृतस्य	अपने किये हुये कर्मके
तानि	वे अग्निहोत्र आदिकर्म	लोके	फलकी प्राप्ति विषे
		वः	तुम्हारे लिये
		एषः	यही
		पन्थाः	मार्ग
		+ अस्ति	है

मूलम् ।

यदा लेलायते ह्यर्चिः समिद्धे हव्यवाहने तदाऽऽज्यभागावंतरेणा-
हुतीः प्रतिपादयेच्छ्रद्धया हुतम् ॥ २ ॥

पदच्छेदः ।

यदा, लेलायते, हि, अर्चिः, समिद्ध, हव्यवाहने, तदा, आज्यभागौ, अन्तरेण, आहुतीः, प्रतिपादयेत्, श्रद्धया, हुतम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यदा	जब	लेलायते	भली प्रकार उठ रही है
समिद्धे	सम्यक्प्रज्वलित	तदा	तब
हव्यवाहने	अग्निविषे		
अर्चिः	ज्वाला		

आज्यभागौ=अग्निके दक्षिण और वामपार्श्व में याने बगल में आज्यभागों को
+ दत्त्वा=देकर
अन्तरेण=अग्निकुण्ड के मध्य विषे
श्रद्धया=श्रद्धापूर्वक
आहुतीः=आहुतियों को
प्रतिपादयेत्=प्रतिपादनकरे याने देवे
तत्=ऐसा होम
हुतम्=श्रेष्ठ होम होता है

नोट–आज्यभागौ आघारभाग और आज्यभाग दोशब्द हैं आघार भाग वह है जो होमके प्रथम अग्नि के दक्षिण पार्श्व में आहुती दीजाय और आज्यभाग वह है जो अग्निकुण्डके वामपार्श्वमें होम दिया जाय पीछे इनके प्रधान होम उद्देश्यनिमित्त मध्यकुण्ड में दिया जाय ॥

मूलम् ।

यस्याग्निहोत्रमदर्शमपौर्णमासमचतुर्मास्यमनाग्रयणमतिथिवर्जितञ्च
अहुतमवैश्वदेवमविधिना हुतमासप्तमांस्तस्य लोकान् हिनस्ति ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ।

यस्य, अग्निहोत्रम्, अदर्शम्, अपौर्णमासम्, अचतुर्मास्यम्, अनाग्रयणम्, अतिथिवर्जितम्, च, अहुतम्, अवैश्वदेवम्, अविधिना, हुतम्, आसप्तमान्, तस्य, लोकान्, हिनस्ति ॥

अन्वयः : पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

यस्य=जिस अग्निहोत्री का
अग्निहोत्रम्=अग्निहोत्र कर्म
अदर्शम्=अमावास्या को विशेषविधि करके रहित है
अपौर्णमासम्=पूर्णमासीकोविशेष विधिसे रहित है
अचतुर्मास्यम्=चातुर्मास्यइष्टिसे रहित है अर्थात् श्रावणादि चार महीनों मेंविशेष होमविधान से रहित है

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

अनाग्रयणम्=शरत् वसन्तऋतु-विशेष नवान्न इष्टिकरके रहित है
अतिथिवर्जितम्=अतिथिकी सेवा से वर्जित है
च=और
अहुतम्=सायं प्रातः होम करके रहित है
अवैश्वदेवम्=नित्य बलिवैश्व-देव से वर्जित है
अथवा=अथवा

अविधिनाहुतम्=विधि करके विरुद्ध होम कियागया है	आसप्तमान्=भूरादि सत्यलोक पर्यंत
तस्य=ऐसे अग्निहोत्री का अग्निहोत्र कर्म	लोकान्=लोकों को
	हिनस्ति=नष्ट करता है

मूलम् ।

काली कराली च मनोजवा च सुलोहिता या च सुधूम्रवर्णा स्फुलिङ्गिनी विश्वरूपी च देवी लेलायमाना इति सप्तजिह्वाः ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ।

काली, कराली, च, मनोजवा, च, सुलोहिता, या, च, सुधूम्रवर्णा, स्फुलिंगिनी, विश्वरूपी, च, देवी, लेलायमानाः, इति, सप्तजिह्वाः ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
या=जो	+ च=और
काली=काली	देवी विश्वरूपी=देवी विश्वरूपी
च=और	इति=ऐसे नामों करके प्रसिद्ध हैं
कराली=कराली	ताः=सोई
च=और	+ अग्नेः=अग्निकी
मनोजवा=मनोजवा	सप्त=सात
च=और	लेलायमानाः=होमद्रव्य के ग्रहण करने को लप लप करनेवाली
सुलोहिता=सुलोहिता	जिह्वाः=जिह्वा हैं
च=और	
सुधूम्रवर्णा=सुधूम्रवर्णा	
+ च=और	
स्फुलिंगिनी=स्फुलिंगिनी	

मूलम् ।

एतेषु यश्चरते भ्राजमानेषु यथा कालं चाहुतयो ह्याददायन् तं नयन्त्येताः सूर्यस्य रश्मयो यत्र देवानां पतिरेकोऽधिवासः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ।

एतेषु, यः, चरते, भ्राजमानेषु, यथा, कालम्, च, आहुतयः, हि,

आददायन्, तम्, नयन्ति, एताः, सूर्यस्य, रश्मयः, यत्र, देवानाम्, पतिः, एकः, अधिवासः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
च यः	और जो हवनकर्ता	रश्मयः	किरणरूप
भ्राजमानेषु	प्रज्वलित	भूत्वा	होकर
एतेषु	अग्नि की इन सात जिह्वाओं विषे	तम्	उस अग्निहोत्री को
यथाकालम्	समय अनुकूल और विधिवत्	आददायन्	लेकर
चरते	होमकरता है	तत्र	उस लोकविषे
हि	निश्चय करके	नयन्ति	प्राप्त करती हैं
एताः	वे	यत्र	जिस लोकविषे
आहुतयः	आहुतियां	देवानाम्	देवतों का
सूर्यस्य	सूर्यके	एकः	मुख्य
		पतिः	स्वामी इन्द्र
		अधिवासः	निवास करता है

मूलम् ।

एह्येहीति तमाहुतयः सुवर्चसः सूर्यस्य रश्मिभिर्यजमानं वहन्ति प्रियां वाचमभिवदन्त्योऽर्चयन्त्य एष वः पुण्यः सुकृतो ब्रह्मलोकः ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ।

एहि, एहि, इति, तम्, आहुतयः, सुवर्चसः, सूर्यस्य, रश्मिभिः, यजमानम्, वहन्ति, प्रियाम्, वाचम्, अभिवदन्त्यः, अर्चयन्त्यः, एषः, वः, पुण्यः, सुकृतः, ब्रह्मलोकः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सुवर्चसः	प्रकाशमान है तेज जिन के ऐसी	एहि एहि इति	आवो आवो इस प्रकार
आहुतयः	आहुतियां	+ आह्वयन्त्यः	बुलाती हैं

च=और
अर्चयन्त्यः=आदरकरती हैं कि
वः=तुम्हारे
पुण्यः= पुण्यैः=पुण्यों करके
सुकृतः= साधन कियाहुआ यानी भलीप्रकार प्राप्त किया हुआ
एषः=यह
ब्रह्मलोकः=स्वर्गलोक है
इति=ऐसी
प्रियाम्=प्रिय
वाचम्=वाणी को
अभिवदन्त्यः=कहती हुई
सूर्यस्य=सूर्य के
रश्मिभिः=किरणों द्वारा
तम्=उस
यजमानम्=यजमानको यानेयज्ञकर्ताको
+मृतेः पश्चात्=मरनेपीछे
वहन्ति=स्वर्गादिलोकोंविषे प्राप्त करती हैं

मूलम् ।

प्लवा ह्येते अदृढा यज्ञरूपा अष्टादशोक्तमवरं येषु कर्म एतच्छ्रेयो येऽभिनन्दन्ति मूढा जरामृत्युं ते पुनरेवापियन्ति ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ।

प्लवाः, हि, एते, अदृढाः, यज्ञरूपाः, अष्टादश, उक्तम्, अवरम्, येषु, कर्म, एतत्, श्रेयः, ये, अभिनन्दन्ति, मूढाः, जरामृत्युम्, ते, पुनः, एव, अपियन्ति ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

येषु=जिन यज्ञआदि कर्मों के विषे
अवरम्=अश्रेष्ठ
कर्म=कर्म
उक्तम्=अपरा विद्या करके कहा गया है
+ तेषु=उनविषे
हि=निश्चय करके
एते=ये

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

अष्टादश= अठारहअर्थात् १६ ऋत्विक् १ यजमान १ उसकी पत्नी
यज्ञरूपः=यज्ञके साधक
अदृढाः=नाशवान्
प्लवाः=नौका हैं
एतत्=यह कर्ममार्ग
श्रेयः=कल्याणकारक है

इति=ऐसा
+ ज्ञात्वा=जानकर
ये=जो
मूढाः=मूर्ख
अभिनन्दन्ति=हर्षित होते हैं
ते=वे
पुनःएव=फिरफिर
जरामृत्युम्=जरामरणभाव को
अपियन्ति=प्राप्त होते हैं

मूलम् ।

अविद्यायामन्तरे वर्तमानाः स्वयं धीराः पण्डितम्मन्यमानाः जङ्घन्यमानाः परियन्ति मूढा अन्धेनेव नीयमाना यथाऽन्धाः ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ।

अविद्यायाम्, अन्तरे, वर्त्तमानाः, स्वयम्, धीराः, पण्डितम्मन्यमानाः, जङ्घन्यमानाः, परियन्ति, मूढाः, अन्धेन, इव, नीयमानाः, यथा, अन्धाः ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

ये=जो लोक
अविद्यायाम्=अविद्याके
अन्तरे=बिषे
वर्त्तमानाः=विद्यमान हैं
च=और
यथास्वयम्=हमहीं
धीराः=बुद्धिमान्
पण्डितम्मन्यमानाः=पण्डित हैं ऐसा अपनेको माननेवाले हैं
ते=वे
मूढाः=मूर्ख

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

जंघन्यमानाः=जन्म जरा व्याधि आदि दुःखों से पीड़ित होते हुये
परियन्ति=जन्ममरण भाव में ऐसे भ्रमते हैं
इव=जैसे
अन्धाः=अंधे लोक
अंधेन=अंधेपुरुषकरके
नीयमानाः=लेजाये जाते हुये
+ गर्तादिषु=गढे आदिकों में
+ पतन्ति=गिरतेहैं और क्लेश उठाते हैं

मूलम् ।

अविद्यायां बहुधा वर्त्तमाना वयं कृतार्था इत्यभिमन्यन्ति बालाः यत्कर्मिणो न प्रवेदयन्ति रागात्तेनातुराः क्षीणलोकाश्च्यवन्ते ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ।

अविद्यायाम्, बहुधा, वर्त्तमानाः, वयम्, कृतार्थाः, इति, अभिमन्यन्ति, बालाः, यत्, कर्मिणः, न, प्रवेदयन्ति, रागात्, तेन, आतुराः, क्षीणलोकाः, च्यवन्ते ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्	जो
कर्मिणः	कर्मीलोक
बहुधा	अनेक प्रकारके
अविद्यायाम्	अविद्याके विषे
वर्त्तमानाः	वर्त्तमान हैं
+ च	और
वयम्	हमहीं
कृतार्थाः	कृतकृत्य हैं
इति	ऐसा
अभिमन्यन्ति	अभिमान करते हैं
च	और
रागात्	कर्मफल की प्रीति के कारण
न प्रवेदयन्ति	कर्मफल के भोग के अंत्य विषे अपने पतन को नहीं जानते हैं
तेन	ऐसे अज्ञान करके
आतुराः	पीड़ित होते हुये
क्षीणलोकाः	कर्मफल की समाप्ति होने से क्षीण हुये हैं लोक जिन के ऐसे
+ ते	वे
बालाः	मूढ़
च्यवन्ते	स्वर्गादि लोक से च्युत होते हैं याने मनुष्यलोकादि अधोलोक को प्राप्त होते हैं

मूलम् ।

इष्टापूर्त्तं मन्यमाना वरिष्ठं नान्यच्छ्रेयो वेदयन्ते प्रमूढाः नाकस्य पृष्ठे ते सुकृतेनुभूत्वेमं लोकं हीनतरञ्चाविशन्ति ॥ १० ॥

पदच्छेदः ।

इष्टापूर्त्तम्, मन्यमानाः, वरिष्ठम्, न, अन्यत्, श्रेयः, वेदयन्ते, प्रमूढाः, नाकस्य, पृष्ठे, ते, सुकृते, अनुभूत्वा, इमम्, लोकम्, हीनतरम्, च, आविशन्ति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+ ये	जो कर्मीलोक
इष्टम्	यज्ञ अग्निहोत्रादि श्रौतकर्मको
+ च	और
पूर्तम्	वापीकूपतडागादि स्मार्तकर्मको ही
वरिष्ठम्	श्रेष्ठ
मन्यमानाः	माननेवाले हैं
+ च	और
अन्यत्	आत्मज्ञान
श्रेयः	श्रेयका साधन है
+ इति	ऐसा
न	नहीं
वेदयन्ते	जानते हैं
ते	वे
प्रमूढाः	अतिमूर्ख
नाकस्य	स्वर्गके
पृष्ठे	मध्यविषे
सुकृते	सुकृतम् = कर्मफलको
अनुभूत्वा	भोगकरके
+ कर्मफलक्षये	कर्मफलके क्षय होने पर
इमम्	इस
लोकम्	मनुष्य लोक को
च	वा
हीनतरम्	पशुयोनिनरकआदि हीनलोक को
आविशन्ति	प्राप्त होते हैं

मूलम् ।

तपः श्रद्धे ये ह्युपवसन्त्यरण्ये शान्ता विद्वांसो भैक्ष्यचर्यां चरन्तः सूर्यद्वारेण ते विरजाः प्रयान्ति यत्रामृतः स पुरुषो ह्यव्ययात्मा ॥ ११ ॥

पदच्छेदः ।

तपः, श्रद्धे, ये, हि, उपवसन्ति, अरण्ये, शान्ताः, विद्वांसः, भैक्ष्यचर्याम्, चरन्तः, सूर्यद्वारेण, ते, विरजाः, प्रयान्ति, यत्र, अमृतः, सः, पुरुषः, हि, अव्ययात्मा ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
हि	निश्चय करके
शान्ताः	ज्ञान है प्रधान जिनको ऐसे
ये	जो अपराविद्या के उपासक
विद्वांसः	विद्वान् गृहस्थी हैं
+ च	और
+ ये	जो
भैक्ष्यचर्याम्	भिक्षाचार को
चरन्तः	धारण करते हुये

अरण्ये=वानप्रस्थाश्रमविषे

तपःश्रद्धे={ तप नाम शास्त्रोक्त स्वाश्रमधर्म और श्रद्धा नाम हिरण्यगर्भ की उपासना को

उपवसन्ति=अनुष्ठान करते हैं

ते=वे

विरजाः विरजसः = { शुद्धकर्म्म के आचरण से निर्म्मलहोतेहुये

सूर्यद्वारेण=उत्तरायणमार्गद्वारा

तत्र=उससत्यलोक विषे

प्रयान्ति=प्राप्त होते हैं

यत्र=जिस लोक विषे

अमृतः=अमृतस्वरूपप्रथम उत्पन्न हुआ

अव्ययात्मा=अविनाशी स्वभाव वाला

सः=वह

पुरुषः=हिरण्यगर्भ पुरुष स्थित है

सूलम् ।

परीक्ष्य लोकान् कर्मचितान् ब्राह्मणो निर्वेदमायान्नास्त्यकृतः कृतेन तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत् समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम् ॥ १२ ॥

पदच्छेदः ।

परीक्ष्य, लोकान्, कर्मचितान्, ब्राह्मणः, निर्वेदम्, आयात्, न, अस्ति, अकृतः, कृतेन, तद्विज्ञानार्थम्, सः, गुरुम्, एव, अभिगच्छेत्, समित्पाणिः, श्रोत्रियम्, ब्रह्मनिष्ठम् ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

\+ एवम्=इसप्रकार

कर्मचितान्=कर्मोंकरके प्राप्त

लोकान्={ दक्षिणायन और उत्तरायण मार्ग से पाने योग्य स्वर्गादि लोकों को

\+ ये परिणामे नश्वराःजन्म जरामरणदाः = { जो परिणाम में नाशवान् और जन्म जरामरण के देनेवाले हैं

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

\+ तान्=उनको

परीक्ष्य=भली प्रकार से विचार करके

ब्राह्मणः=मुमुक्षु पुरुष

निर्वेदम्=वैराग्यको

आयात्=दृढतासे प्राप्त करै

\+ यतः=जिस कारण

अकृतः=कर्मरहित नित्य रूप परमात्मा

कृतेन=कर्म करके
न अस्ति=प्राप्तहोनेयोग्य नहीं है
+ अतः=इसीकारण
सः=वह विचारवान्
मुमुक्षु पुरुष
तद्विज्ञानार्थम्=उस परमात्मा के
जाननेके अर्थ
समित्पाणिः=गुरुपूजाकी सामग्री
को हाथ में लेकर

श्रोत्रियम्=वेदवेदान्तों का
पारंगत
+ च=और
ब्रह्मनिष्ठम्=आत्मज्ञान विषे
निपुण
गुरुम् एव=गुरुके ही
अभिगच्छेत्=शरणमें जावै

मूलम् ।

तस्मै स विद्वानुपसन्नाय सम्यक् प्रशान्तचित्ताय शमान्विताय येनाक्षरं पुरुषं वेद सत्यं प्रोवाच तां तत्त्वतो ब्रह्मविद्याम् ॥ १३ ॥

पदच्छेदः ।

तस्मै, सः, विद्वान्, उपसन्नाय, सम्यक्, प्रशान्तचित्ताय, शमान्विताय, येन, अक्षरम्, पुरुषम्, वेद, सत्यम्, प्रोवाच, ताम्, तत्त्वतः, ब्रह्मविद्याम् ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

सम्यक्प्रशान्तचित्ताय = दृढवैराग्य करके विरक्त है चित्त जिसका
+ च=और
शमान्विताय = बाह्याभ्यंतरकामनाओं से विरक्त है जो ऐसे
उपसन्नाय=शरण में आये हुये
तस्मै=उस शिष्य के अर्थ
येन=यया=जिस विद्या करके

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

सत्यम्=सत्य
अक्षरम्=अविनाशी
पुरुषम्=परमात्मा को
तत्त्वतः=यथार्थ
वेद=विद्यात्=वह जानसकै
तां ब्रह्मविद्याम्=उस ब्रह्मविद्या को
सः=वह
विद्वान्=श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरु
प्रोवाच=ब्रूयाद्=उपदेश करै

इति प्रथम मुण्डके द्वितीयः खंडः ॥

इति प्रथममुण्डक भाषा टीका समाप्त ॥

मूलम् ।

तदेतत्सत्यं यथा सुदीप्तात् पावकाद्विस्फुलिंगाः सहस्रशः प्रभवन्ते सरूपाः तथाऽक्षराद्विविधाः सौम्य भावाः प्रजायन्ते तत्र चैवापियन्ति ॥ १ ॥

पदच्छेदः ।

तत्, एतत्, सत्यम्, यथा, सुदीप्तात्, पावकात्, विस्फुलिङ्गाः, सहस्रशः, प्रभवन्ते, सरूपाः, तथा, अक्षरात्, विविधाः, सौम्य, भावाः, प्रजायन्ते, तत्र, च, एव, अपियन्ति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सौम्य	हे सौम्य शौनक
तत्	वह
एतत्	यह क्षर और अक्षर से अतीत पुरुष
सत्यम्	परमार्थ करके सत्य है
यथा	जैसे
सुदीप्तात्	भली प्रकार प्रज्वलित
पावकात्	अग्नि से
सरूपाः	अग्निके समान
सहस्रशः	अनेक प्रकारकी
विस्फुलिंगाः	चिनगारियां
प्रभवन्ते	उत्पन्न होती हैं
तथा	तैसेही
अक्षरात्	मायोपाधि पुरुष याने ईश्वर से
विविधाः	अनेक देहोपाधि
भावाः	जीव
प्रजायन्ते	उत्पन्न होते हैं
च	और
तत्र एव	उसी ईश्वर में
अपियन्ति	लीन होजाते हैं

मूलम् ।

दिव्यो ह्यमूर्तः पुरुषः स वाह्याभ्यन्तरो ह्यजः अप्राणो ह्यमनाः शुभ्रो ह्यक्षरात्परतः परः ॥ २ ॥

पदच्छेदः ।

दिव्यः, हि, अमूर्त्तः, पुरुषः, स, वाह्याभ्यन्तरः, हि, अजः, अप्राणः, हि, अमनाः, शुभ्रः, हि, अक्षरात्, परतः, परः ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

सः=वह परमपुरुष

हिहिहि=अत्यन्त निश्चयकरके

दिव्यः=अलौकिक और स्वयं प्रकाश है

अमूर्त्तः=रूपरहितहै

पुरुषः=परिपूर्ण और सब शरीरों विषे शयन करने वाला है

सवाह्याभ्यन्तरः=चराचर जगत् के वाह्याभ्यन्तर विषे व्याप्त है

अजः=अजन्मा है

अप्राणः=चलनात्मक प्राण॰ वायुरहित है अर्थात् कर्मेन्द्रि-यों से रहित है

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

अमनाः=संकल्पविकल्पा-त्मक मन से रहित है यानी ज्ञान इन्द्रियों से रहितहै

शुभ्रः=सर्व उपाधियों से रहित होने के कारण शुद्ध है

अतः=इसीकारण

अक्षरात्=नामरूप उपा-धिका बीजभूत हिरण्यगर्भ से

+ च=और

परतः=मायोपाधि ईश्वर से भी

परः=परे है

मूलम् ।

एतस्माज्जायते प्राणो मनः सर्वेन्द्रियाणि च खं वायुर्ज्योतिराप पृथिवी विश्वस्य धारिणी ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ।

एतस्मात्, जायते, प्राणः, मनः, सर्वेन्द्रियाणि, च, खम्, वायुः, ज्योतिः, आपः, पृथिवी, विश्वस्य, धारिणी ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

एतस्मात्=उसी सविशेष पुरुष से

प्राणः=प्राण

मनः=मन

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

सर्वेन्द्रियाणि=दशों इन्द्रियां

खम्=आकाश

वायुः=वायु

ज्योतिः=तेज

आपः=जल	धारिणी=धारण करने वाली
च=और	पृथिवी=पृथिवी
विश्वस्य=सबको	जायते=उत्पन्न होती है

मूलम् ।

अग्निर्मूर्द्धा चक्षुषी चन्द्रसूर्यौ दिशः श्रोत्रे वाग्विवृताश्च वेदाः वायुः प्राणो हृदयं विश्वमस्य पद्भ्यां पृथिवी ह्येष सर्वभूतान्तरात्मा ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ।

अग्निः, मूर्द्धा, चक्षुषी, चन्द्रसूर्यौ, दिशः, श्रोत्रे, वाग्विवृताः, च, वेदाः, वायुः, प्राणः, हृदयम्, विश्वम्, अस्य, पद्भ्याम्, पृथिवी, हि, एषः, सर्वभूतान्तरात्मा ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अस्य=इस विराट् पुरुष का	
अग्निः=स्वर्ग लोक	
मूर्द्धा=मस्तक है	
चन्द्रसूर्यौ=चन्द्रमा और सूर्य	
चक्षुषी=दोनों नेत्र हैं	
दिशः=दशों दिशा	
श्रोत्रे=दोनों कर्ण हैं	
च=और	
वेदाः=सब वेद	
वाग्विवृताः=उसकी विस्तृत वाणी है	
च=और	

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यस्य=जिसका	
वायुः=वायु	
प्राणः=प्राण है	
विश्वम्=समस्त विश्व	
हृदयम्=अन्तःकरण है	
पृथिवी=पृथिवी	
यस्य=जिसके	
पद्भ्याम्=चरणों से	
जाता=उत्पन्न हुई है	
एषः=वही सविशेष पुरुष	
हि=निश्चय करके	
सर्वभूतान्तरात्मा=संपूर्ण भूतों का अंतरात्मा है	

१—नोट—जायते क्रियाका सम्बन्ध हरएक शब्द प्राणादि से है जैसे प्राणः जायते ॥

मूलम् ।

तस्मादग्निः समिधो यस्य सूर्यः सोमात्पर्जन्य ओषधयः पृथिव्याम् पुमान् रेतः सिंचति योषितायां बह्वीः प्रजाः पुरुषात् सम्प्रसूताः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ।

तस्मात्, अग्निः, समिधः, यस्य, सूर्यः, सोमात्, पर्जन्यः, ओषधयः, पृथिव्याम्, पुमान्, रेतः, सिञ्चति, योषितायाम्, बह्वीः, प्रजाः, पुरुषात्, सम्प्रसूताः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यस्य	जिसके
सूर्यः	सूर्य
च	और
सोमात् सोमः	चन्द्र
समिधः	समिध हैं ऐसा
अग्निः	स्वर्गरूप प्रथम अग्नि
तस्मात्	उस
पुरुषात्	परम पुरुष से
+ सम्प्रसूतः	उत्पन्न होता है
च	और
ततः	उस स्वर्गरूप प्रथम अग्नि से
पर्जन्यः	मेघरूप द्वितीय अग्नि
प्रसूयते	उत्पन्न होता है
ततः	तिस मेघरूप द्वितीय अग्नि से
पृथिव्याम्	पृथिवीरूप तृतीय अग्नि विषे
ओषधयः	अन्नादि ओषधिमान्
+ च	और
ततः	ओषधियों के परिणाम से
पुमान्	पुरुषरूप चतुर्थ अग्नि
+ प्रसूयन्ते	उत्पन्न होती हैं
रेतः	वीर्य को
योषितायाम्	स्त्रीरूप पंचम अग्नि विषे
सिञ्चति	सिंचन करता है
+ एवं क्रमेण	इस क्रम से
बह्वीः	बह्व्यः = बहुत याने असंख्य
प्रजाः	ब्राह्मणादि सब प्रजा
सम्प्रसूताः	सम्यक्प्रकार उत्पन्न होती हैं

मूलम् ।

तस्मादृचः सामयजूंषि दीक्षा यज्ञाश्च सर्वे क्रतवो दक्षिणाश्च संवत्सरश्च यजमानश्च लोकाः सोमो यत्र पवते यत्र सूर्यः ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ।

तस्मात्, ऋचः, सामयजूंषि, दीक्षाः, यज्ञाः, च, सर्वे, क्रतवः, दक्षिणाः, च, संवत्सरम्, च, यजमानः, च, लोकाः, सोमः, यत्र, पवते, यत्र, सूर्यः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तस्मात्	उसी पुरुष से
ऋचः	ऋग्वेदके मन्त्र
साम	सामवेदके मन्त्र
यजूंषि	यजुर्वेदके मन्त्र
दीक्षाः	यज्ञकर्ता के नियम
सर्वे यज्ञाः	अग्निहोत्र आदि सबयज्ञसुवर्ण खदिरादि स्तम्भ रहित
च	और
क्रतवः	अश्वमेध आदि यज्ञ स्वर्ण खदिर आदि स्तम्भ सहित
दक्षिणाः	एकगोदान से लेकर सर्व्वस्व दानतकदक्षिणा
+ च	और
संवत्सरम्	दिनरात आदि कालरूप संवत्सर जिसकरके यज्ञादिकर्मों के काल का ज्ञान होता है
च	और
यजमानः	यज्ञादिकर्मों का कर्ता यजमान
जायन्ते	उत्पन्न होते हैं
च	और
यत्र	जिस लोक विषे
सोमः	चन्द्रमा
पवते	रहता है याने जो लोक दक्षिणायनमार्ग करके प्राप्त होने योग्य हैं
+ च	और
यत्र	जिस लोक विषे
सूर्यः	सूर्य

+ तपति= { तपता है याने जो लोक उत्तरायण मार्ग करके प्राप्त होने योग्य हैं

+ ते=वे
लोकाः=सब लोक
+ तस्मात्=उसी
+ पुरुषात्=पुरुष से
+ जायन्ते=उत्पन्न होते हैं

मूलम् ।

तस्माच्च देवा बहुधा संप्रसूताः साध्या मनुष्याः पशव वयांसि प्राणापानौ व्रीहियवौ तपश्च श्रद्धा सत्यं ब्रह्मचर्यं विधिश्च ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ।

तस्मात्, च, देवाः, बहुधा, संप्रसूताः, साध्याः, मनुष्याः, पशवः, वयांसि, प्राणापानौ, व्रीहियवौ, तपः, च, श्रद्धा, सत्यम्, ब्रह्मचर्यं, विधिः, च ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

च=और
तस्मात्=उसी पुरुष से
देवाः= { यज्ञादि कर्मों के अंगभूत और यज्ञ भाग को ग्रहण करके फल दान देने में समर्थ ऐसे देवता
बहुधा= { इन्द्र वसु रुद्र आदि अनेक प्रकार के
सम्प्रसूताः=उत्पन्न होते हैं
साध्याः=साध्य नामक देवता
मनुष्याः= { कर्म द्वारा देवतों को भाग देने वाले मनुष्य
पशवः=यज्ञों के अंगभूत पशुमात्र
वयांसि=सब जाति के पक्षी

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

प्राणापानौ= { सब प्राणियों के जीवनभूत प्राण और अपानवायु
व्रीहियवौ= { यज्ञों विषे हविर्द्रव्य के अर्थ धान्य और यव
तपः= { यज्ञ आदि कर्मके अंगभूत और पुरुषों के शरीर शोधक स्वाश्रमधर्म्म का आचरण
श्रद्धा= { पुरुषार्थ साधक यज्ञादि कर्मों विषे आस्तिक्य बुद्धि
सत्यम्=सत्य वचन और सत्याचरण
ब्रह्मचर्यम्=ब्रह्मचर्य
च=और

विधिः=सब कर्मों का विधान
+ एतत्सर्वम्=यह सब
+ तस्मात् पुरुषात् =उसी पुरुष से
सम्प्रसूयन्ते=सम्यक् प्रकार उत्पन्न होता है

मूलम् ।

सप्त प्राणाः प्रभवन्ति तस्मात् सप्तार्चिषः सप्त समिधः सप्त होमाः सप्त इमे लोका येषु चरन्ति प्राणा गुहाशया निहिताः सप्त सप्त ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ।

सप्त, प्राणाः, प्रभवन्ति, तस्मात्, सप्त, अर्चिषः, सप्त, समिधः, सप्त, होमाः, सप्त, इमे, लोकाः, येषु, चरन्ति, प्राणाः, गुहाशयाः, निहिताः, सप्त, सप्त ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

सप्त=सात
प्राणाः=मस्तक गतप्राण याने चक्षुरादि ज्ञान इन्द्रियां
+ च=और
सप्त=सात
अर्चिषः=ज्योतियां याने स्वस्व विषय ज्ञान
+ च=और
सप्त=सात
समिधः=विषय
+ च=और
सप्त=सात
होमाः=होम याने विषय भोग
+ च=और
सप्त=सात

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

लोकाः=इन्द्रियों के स्थान
येषु=जिनके विषे
गुहाशयाः=स्वप्नावस्था में हृदयाकाशमध्ये शयन करनेवाले
प्राणाः=प्राण
+ यान्=जिनको
सप्तसप्त=सात सात प्रकार से प्रतिदेह
निहिताः=स्थापित किया है सष्टाने
चरन्ति=विचरते हैं
+ ते=सो
इमे=ये सब
तस्मात्=उसी पुरुष से
प्रभवन्ति=उत्पन्न होते हैं

मूलम् ।

अतः समुद्रा गिरयश्च सर्वेऽस्मात्स्यन्दन्ते सिंधवः सर्वरूपाः अतश्च सर्वा ओषधयो रसश्च येनैष भूतैस्तिष्ठते ह्यन्तरात्मा ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ।

अतः, समुद्राः, गिरयः, च, सर्वे, अस्मात्, स्यन्दन्ते, सिन्धवः, सर्वरूपाः, अतः, च, सर्वाः, ओषधयः, रसः, च, येन, एषः, भूतैः, तिष्ठते, हि, अन्तरात्मा ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अतः	उसी पुरुष से
सर्वे	सब क्षारादि सात
समुद्राः	समुद्र
च	और
सर्वे	सब सुवर्णाचल हिमाचलादि
गिरयः	पर्वत
+ प्रभवन्ति	उत्पन्न होते हैं
च	और
अस्मात्	उसी पुरुष से
सर्वरूपाः	गंगा यमुना आदि अनेक प्रकार की
सिन्धवः	नदियां
स्यन्दन्ते	निकलती हैं
च	और
अतः	उसी पुरुष से
सर्वाः	सब व्रीहीयवादि
ओषधयः	ओषधियां
सम्भवन्ति	उत्पन्न होती हैं
च	और
+ अस्मात्	उसी पुरुष से
रसः	मधुर आदि छै प्रकार का रस
येन	जिस करके
एषः	यह
अन्तरात्मा	यह अन्तर आत्मा यानी लिंग शरीर
हि	निःसन्देह
भूतैः	स्थूल पंच महाभूतों करके परिवेष्टित
तिष्ठते	सबके मध्य विषे स्थित होकर वर्द्धमान है
उत्पद्यते	उत्पन्न होता है

मूलम् ।

पुरुष एवेदं विश्वं कर्म तपो ब्रह्म परामृतम् एतद्यो वेद

निहितं गुहायां सोऽविद्याग्रन्थिं विकिरतीह सौम्य ॥ १० ॥

पदच्छेदः ।

पुरुषः, एव, इदम्, विश्वम्, कर्म, तपः, ब्रह्म, परामृतम्, एतत्, यः, वेद, निहितम्, गुहायाम्, सः, अविद्याग्रन्थिम्, विकिरति, इह, सौम्य ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सौम्य	हे सौम्य
इदम्	यह दृश्यमान
विश्वम्	सब जगत्
पुरुषः	बाह्याभ्यंतर सत्यात्मक पुरुषरूप
एव	ही
+ अस्ति	है
+ अन्यत् नामरूपात्मकं मिथ्या	और नाम रूप सब मिथ्या है
कर्म	निष्काम कर्म करके प्राप्य
च	और
तपः	तपरूप ज्ञान करके प्राप्य
+ यत्	जो
परामृतम्	परम अमृत
ब्रह्म	ब्रह्म है
च	सोई
एतत्	यह ब्रह्म
गुहायाम्	सब प्राणियों के हृदय विषे
निहितम्	स्थित है
इति	ऐसा
यः	जो पुरुष
वेद	अभेद से जानता है
सः	वह
इह	इसी शरीर विषे
अविद्याग्रन्थिम्	चिदजड़ ग्रन्थिको याने वासना को
विकिरति	नाश करता है अर्थात् जीवन-मुक्त होता है

इति द्वितीयमुण्डके प्रथमः खण्डः ॥

मूलम् ।

आविः सन्निहितं गुहाचरन्नाम महत्पदमत्रैतत्समर्पितम् एजत्प्राण-न्निमिषच्च यदेतज्जानथ सदसद्वरेण्यं परं विज्ञानाद्यद्वरिष्ठं प्रजानाम् ॥ १ ॥

पदच्छेदः ।

आविः, सन्निहितम्, गुहाचरन्, नाम, महत्पदम्, अत्र, एतत्, समर्पितम्, एजत्, प्राणत्, निमिषत्, च, यत्, एतत्, जानथ, सदसत्, वरेण्यम्, परम्, विज्ञानात्, यत्, वरिष्ठम्, प्रजानाम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
हे शिष्य	अहो शिष्य
यत्	जो कुछ
एतत्	यह
एजत्	चलायमान
प्राणत्	प्राणवान्
निमिषत्	क्रियावान्
सदसत्	मूर्त और अमूर्त पदार्थ है
तत्सर्वम्	सो सब
अत्र	उस उक्त परब्रह्म विषे
समर्पितम्	सम्यक् प्रकार स्थित है
+ अतः	इसी कारण
+ तत्	वह ब्रह्म
महत्पदम्	सब विश्व का निधान है
आविः	बाह्याभ्यन्तर प्रकाशमान है
च	और
सन्निहितम्	हृदयाकाश विषे सम्यक् प्रकार स्थित है और
गुहाचरन्नाम	गुहा विषे विचरने वाला प्रसिद्ध है
च	और
यत्	जो कुछ
प्रजानाम्	मनुष्यों के
विज्ञानात्	ज्ञान से
परम्	परे है याने दिव्य ज्ञान करके ही जानने योग्य है
एतत्	उस को
+ यूयम्	तुम सब
वरिष्ठम्	श्रेष्ठ
वरेण्यम्	नित्य जानने योग्य ब्रह्म
जानथ	जानो

मूलम् ।

यदर्चिमद्यदणुभ्योऽणु च यस्मिँल्लोका निहिता लोकिनश्च तदेतदक्षरं ब्रह्म स प्राणस्तदु वाङ्मनः तदेतत्सत्यं तदमृतं तद्वेद्धव्यं सौम्य विद्धि ॥ २ ॥

पदच्छेदः ।

यत्, अर्चिमत्, यत्, अणुभ्यः, अणु, च, यस्मिन्, लोकाः, निहिताः, लोकिनः, च, तत्, एतत्, अक्षरम्, ब्रह्म, सः, प्राणः, तत्, उ, वाङ्मनः, तत्, एतत्, सत्यम्, तत्, अमृतम्, तत्, वेद्धव्यम्, सौम्य, विद्धि ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सौम्य=हे सौम्य	
यत्=जो	
अर्चिमत्=स्वयं प्रकाश है	
च=और	
यत्=जो	
अणुभ्यः=परमाणुवों से भी	
अणु=अतिही सूक्ष्म है कि	
यस्मिन्=जिस विषे	
लोकाः=चतुर्दशलोक	
च=और	
लोकिनः=लोकनिवासी	
निहिताः=स्थित हैं	
तत्=सोई	
एतत्=यह	
ब्रह्म=ब्रह्म	
अक्षरम्=अविनाशी है	

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः=सोई	
प्राणः=सूत्रात्मा प्राण है	
उ=और	
तत्=सोई	
वाङ्मनः=वाणी और मन है	
तत्=सोई	
एतत्=यह	
सत्यम्=सत्यस्वरूप है	
तत्=सोई	
अमृतम्=अमृत है	
तत्=सोई	
वेद्धव्यम्=भेदने याने चित्त से भावना करने योग्य है	
+ इति=ऐसा	
+ त्वम्=तू	
विद्धि=जान	

मूलम् ।

धनुर्ग्रहीत्वौपनिषदं महास्त्रं शरं ह्युपासानिशितं सन्धयीत आयम्य तद्भावगतेन चेतसा लक्ष्यं तदेवाक्षरं सौम्य विद्धि ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ।

धनुः, गृहीत्वा, औपनिषदम्, महास्त्रम्, शरम्, हि, उपासानिशितम्,

सन्धयीत, आयम्य, तद्भावगतेन, चेतसा, लक्ष्यम्, तत्, एव, अक्षरम्, सौम्य, विद्धि ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सौम्य	हे सौम्य	सन्धीयत	सन्धय=रखकर
त्वम्	तू	तत्	उस
औपनिषदम्	उपनिषदों के विचार से उत्पन्न हुये	अक्षरम्	अक्षर परब्रह्म को
महास्त्रम्	अस्त्रों विषे श्रेष्ठ ऐसे	लक्ष्यम्	लक्ष्य
धनुः	धनुष को	+ कृत्वा	करके
गृहीत्वा	ग्रहण करके	+ च	और
हि	और	तद्भावगतेन	उसकी भावना करके तन्मय हुये
उपासानिशितम्	तीव्र उपासना से उत्पन्न हुये तीक्ष्ण	चेतसा	एकाग्रचित्त से
शरम्	बाण को	एव	भली प्रकार
+ तत्र	उस धनुष में	आयम्य	खैंचके
		+ तस्य	उसका
		विद्धि	वेधन कर

मूलम् ।

प्रणवो धनुः शरो ह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत् ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ।

प्रणवः, धनुः, शरः, हि, आत्मा, ब्रह्म, तल्लक्ष्यम्, उच्यते, अप्रमत्तेन, वेद्धव्यम्, शरवत्, तन्मयः, भवेत् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
हि	इसलक्ष्यरूपके विषे निश्चय करके	आत्मा	बुद्धिविशिष्ट चैतन्य
प्रणवः	प्रणव याने ओंकार	शरः	बाण है
धनुः	धनुष है	तल्लक्ष्यम्	उन दोनों का लक्ष्य
		ब्रह्म	ब्रह्म

उच्यते=कहा जाता है
+ तत्=वह लक्ष्य
अप्रमत्तेन=प्रमाद रहित पुरुष करके
वेद्धव्यम्=बेधने योग्य है
+ एवं वेद्धा=ऐसा बेधने वाला मुमुक्षु
शरवत्=बाणवत्
तन्मयः=तन्मय याने तदाकार
भवेत्=होजाता है

मूलम् ।

यस्मिन् द्यौः पृथिवी चान्तरिक्षमोतं मनः सह प्राणैश्च सर्वैः तमेवैकं जानथ आत्मानमन्या वाचो विमुंचथ अमृतस्यैष सेतुः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ।

यस्मिन्, द्यौः, पृथिवी, च, अन्तरिक्षम्, ओतम्, मनः, सह, प्राणैः, च, सर्वैः, तम्, एव, एकम्, जानथ, आत्मानम्, अन्याः, वाचः, विमुञ्चथ, अमृतस्य, एषः, सेतुः ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

+ हे शिष्याः=अहो शिष्यो
यस्मिन्=जिस विषे
द्यौः=स्वर्ग
पृथिवी=पृथिवी
च=और
अन्तरिक्षम्=आकाश
च=और
सर्वैः=सब
प्राणैः=प्राणों
सह=सहित
मनः=मन
ओतम्=समर्पित है याने ओतप्रोत है
तम्=उस
एव=ही

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

आत्मानम्=अक्षर आत्मा को
+ यूयम्=तुम सब
एकम्=अद्वितीय ब्रह्म
जानथ=जानो
यतः=क्योंकि
एषः=यह परा विद्या की उपासना
अमृतस्य=मोक्षकी प्राप्ति विषे
सेतुः=भवसागर से पार करने वाली सेतु है
अन्याः=और
वाचः=अपराविद्या विषयक वाणी को याने कर्मकाण्डको
विमुञ्चथ=त्यागो

मूलम् ।

अरा इव रथनाभौ संहता यत्र नाड्यः स एषोऽन्तश्चरते बहुधा जायमानः ॐमित्येवं ध्यायथ आत्मानं स्वस्ति वः पाराय तमसः परस्तात् ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ।

अराः, इव, रथनाभौ, संहताः, यत्र, नाड्यः, सः, एषः, अन्तः, चरते, बहुधा, जायमानः, ॐम्, इति, एवम्, ध्यायथ, आत्मानम्, स्वस्ति, वः, पाराय, तमसः, परस्तात् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
हे शिष्याः	अहो शिष्यो
रथनाभौ	रथचक्रनाभि पिण्डका मध्ये
अराः	अरा
इव	वत्
यत्र	जिस हृदय विषे
नाड्यः	सब देह की नाड़ियां
निहिताः	समर्पित हैं
+ तत्र	उस हृदय के
अन्तः	मध्य भाग विषे
सः	वह पूर्वोक्त
एषः	यह अविनाशी परमात्मा
बहुधा	हर्षदीनताआदि अनेक उपाधियों के साथ अनेक प्रकार का
जायमानः	होता हुआ
चरते	विचरता है
एवम्	इस प्रकार
+ यूयम्	तुम
+ तम्	उस
आत्मानम्	अविनाशी परमात्मा को
ॐम्	प्रणव
इति	करके
ध्यायथ	ध्यान करो
+ मम आशीः	मेरा आशीर्वाद है कि
वः	तुम सब को
तमसः	अविद्या के
परस्तात्	परले
पाराय	पारजाने के लिये
स्वस्ति	निर्विघ्न कल्याण होवै

मूलम् ।

यः सर्वज्ञः सर्वविद्यस्यैष महिमा भुवि दिव्ये ब्रह्मपुरे ह्येष व्योम्न्यात्मा

प्रतिष्ठितः मनोमयः प्राणशरीरनेता प्रतिष्ठितोऽन्ने हृदयं सन्निधाय तद्विज्ञानेन परिपश्यन्ति धीरा आनन्दरूपममृतं यद्विभाति ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ।

यः, सर्वज्ञः, सर्ववित्, यस्य, एषः, महिमा, भुवि, दिव्ये, ब्रह्मपुरे, हि, एषः, व्योम्नि, आत्मा, प्रतिष्ठितः, मनोमयः, प्राणशरीरनेता, प्रतिष्ठितः, अन्ने, हृदयम्, सन्निधाय, तत्, विज्ञानेन, परिपश्यन्ति, धीराः, आनन्दरूपम्, अमृतम्, यत्, विभाति ॥

अन्वयः — पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

यः=जो
आत्मा=परमात्मा
सर्वज्ञः=सर्वज्ञ है
सर्ववित्=सर्ववेत्ता है
च=और
यस्य=जिसका
एषः=यह पूर्वोक्त
महिमा=ऐश्वर्य
भुवि=लोक विषे
विख्यातः=प्रख्यात है
+ च यः=और जो
मनोमयः=मनोमय है
प्राणशरीरनेता=प्राण और शरीर का प्रेरक है
+ च यः=और जो
हृदयम्=बुद्धि को
सन्निधाय=हृदयकमल विषे स्थापित करके
अन्ने=भुक्त अन्न के परिणाम रूपवीर्य विषे
+ स्थितः=स्थित होकर

अन्वयः — पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

प्रतिष्ठितः=स्थूल देह से सूक्ष्म देह में जाने को प्रस्थान किये हुये हैं
+ च=और
यत्=जो
आनन्दरूपम्=आनंदरूप
अमृतम्=अमृतरूप
विभाति=प्रकाशमान है
एषः=यह
दिव्ये=सूक्ष्म कामनारहित शुद्ध बुद्धि करके प्रकाशमान
ब्रह्मपुरे व्योम्नि=हृदय पुण्डरीक के आकाश विषे
हि=निश्चय करके
प्रतिष्ठितः=स्थित है
तत्=उसको
धीराः=विवेकी पुरुष
विज्ञानेन=अनुभव सिद्ध ज्ञान द्वारा
परिपश्यन्ति=सम्यक् प्रकार देखते हैं

मूलम् ।

भिद्यते हृदयग्रन्थिः छिद्यन्ते सर्वसंशयाः क्षीयन्ते चास्य कर्म्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ।

भिद्यते, हृदयग्रन्थिः, छिद्यन्ते, सर्वसंशयाः, क्षीयन्ते, च, अस्य, कर्माणि, तस्मिन्, दृष्टे, परावरे ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
परावरे	कारण कार्यरूप
तस्मिन् दृष्टे	उस ब्रह्म के अनुभव सिद्ध ज्ञान द्वारा साक्षात्कार होने पर
अस्य	इस ज्ञानी के
हृदयग्रन्थिः	अविद्या से उत्पन्न हुये कामरूप हृदयग्रन्थि
भिद्यते	नाश को प्राप्तहोतीहै
+ च	और
+तत् नाशे	उसके नाश होने पर
सर्वसंशयाः	अज्ञान विषयक सब संशय
छिद्यन्ते	नष्ट होते हैं
च	और
+तत् नाशे	उस संशय के नाश होने पर
कर्माणि	आदि से लेकर ज्ञानोत्पत्ति पर्यंत सब कर्म
क्षीयन्ते	क्षयको प्राप्त होते हैं

मूलम् ।

हिरण्मये परे कोशे विरजं ब्रह्म निष्कलं तच्छुभ्रं ज्योतिषां ज्योतिस्तद्यदात्मविदो विदुः ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ।

हिरण्मये, परे, कोशे, विरजम्, ब्रह्म, निष्कलम्, तत्, शुभ्रम्, ज्योतिषाम्, ज्योतिः, तत्, यत्, आत्मविदः, विदुः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्	जो चैतन्य	+ च तत्	और वही
हिरण्मये	बुद्धि करके प्रकाशमान	ज्योतिषाम्	अग्नि सूर्यादि ज्योतियों का
कोशे	हृदयकमल विषे स्थित है	ज्योतिः	प्रकाशक है
विरजम्	अविद्यामल से रहित है	तत्	उस
निष्कलम्	प्राणादि सब कलाओं से पृथक् है	ब्रह्म	ब्रह्म को
तत्	वही	ये	जो
शुभ्रम्	शुद्ध है	विदुः	जानते हैं
		ते	वे
		आत्मविदः	आत्मवेत्ता हैं

मूलम् ।

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोयमग्निः तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ॥१०॥

पदच्छेदः ।

न, तत्र, सूर्यः, भाति, न, चन्द्रतारकम्, न, इमाः, विद्युतः, भान्ति, कुतः, अयम्, अग्निः, तम्, एव, भान्तम्, अनुभाति, सर्वम्, तस्य, भासा, सर्वम्, इदम्, विभाति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्र	जिस परब्रह्म विषे	न भाति	प्रकाश नहीं कर सक्ता है
सूर्यः	सूर्य	च	और
न	नहीं	इमाः	ये आकाश में चमकती हुई
भाति	प्रकाश कर सक्ता है	विद्युतः	बिजलियां
च	और	न भाति	नहीं प्रकाश करसक्तीहैं
चन्द्रतारकम्	तारों के सहित चन्द्रमा		

तत्र=उस विषे
अयम्=यह दृश्यमान
अग्निः=अग्नि
कुतः=कैसे
+ भास्वति=प्रकाश कर सकेगा
+ यतः=जिस कारण
इदम्=यह सूर्य चन्द्रमा आदि
सर्वम्=सब
तम्=उस
भान्तम्=प्रकाशमान के
अनु=पीछे
भाति=प्रकाशते हैं
+ अतः=इसीलिये
इदम्=यह
सर्वम्=सब जगत्
तस्य=उस ब्रह्म के
भासा=प्रकाश करके
एव=ही
विभाति=प्रकाशित होता है

मूलम् ।

ब्रह्मैवेदममृतं पुरस्ताद्ब्रह्म पश्चाद्ब्रह्म दक्षिणतश्चोत्तरेण
अधश्चोर्द्ध्वं च प्रसृतं ब्रह्मैवेदं विश्वमिदं वरिष्ठम् ॥ ११ ॥

पदच्छेदः ।

ब्रह्म, एव, इदम्, अमृतम्, पुरस्तात्, ब्रह्म, पश्चात्, ब्रह्म, दक्षिणतः, च, उत्तरेण, अधः, च, ऊर्ध्वम्, च, प्रसृतम्, ब्रह्म, एव, इदम्, विश्वम, इदम्, वरिष्ठम् ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

यतः=जिस कारण
इदम्=यह
ब्रह्म=ब्रह्म
अमृतम्=अमृतरूप है
च=और
इदम्=यह ब्रह्म
प्रसृतम्=सर्वगत है
च=और
वरिष्ठम्=सब से श्रेष्ठ है
अतः=इसीलिये
पुरस्तात्=आगे
ब्रह्म=ब्रह्म है
पश्चात्=पीछे
ब्रह्म=ब्रह्म है
दक्षिणतः=दहिने
ब्रह्म=ब्रह्म है
उत्तरेण=बायें
+ ब्रह्म=ब्रह्म है
अधः=नीचे
+ ब्रह्म=ब्रह्म है

ऊर्ध्वं=ऊपर	ब्रह्म एव=ब्रह्मरूपही
+ ब्रह्म=ब्रह्म है	अस्ति=है
इदम्=यह	+ इति वेदा- नुशासनं = यह वेद का उपदेश है
विश्वम्=सारा जगत्	

इति द्वितीयमुण्डके द्वितीयः खण्डः ॥

इति द्वितीयमुण्डकं समाप्तम् ॥

मूलम् ।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्योऽभिचाकशीति ॥ १ ॥

पदच्छेदः ।

द्वा, सुपर्णा, सयुजा, सखाया, समानम्, वृक्षम्, परिषस्वजाते, तयोः, अन्यः, पिप्पलम्, स्वादु, अत्ति, अनश्नन्, अन्यः, अभिचाकशीति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सखाया=सखायौ	परस्पर मित्र	अन्यः	एक तो क्षेत्रज्ञात्मा
सयुजा=सयुजौ	एक स्थान में मिलकर रहने वाले	स्वादु	कामनों करके स्वादिष्ट
सुपर्णा=सुपर्णौ	शोभायमान हैं पक्ष जिनके ऐसे	पिप्पलम्	कर्म फलको
द्वा=द्वौ	दो पक्षी यानी एक लिंगोपाधि क्षेत्रज्ञ आत्मा दूसरा ईश्वर	अत्ति	अज्ञानता से भोक्ता है
समानम्	एकही	+ च	और
वृक्षम्	शरीररूपी वृक्षविषे	अन्यः	दूसरा ज्ञानसंयुक्त ईश्वर
परिषस्वजाते	स्थित हैं	अनश्नन्	कर्मफलको न भोक्ता हुआ
तयोः	उनमेंसे	अभिचाकशीति	भोग्यऔर भोक्ता दोनोंका प्रेरक हो के केवल साक्षीरूप से देखता है

मूलम् ।

समाने वृक्षे पुरुषो निमग्नोऽनीशया शोचति मुह्यमानः जुष्टं यदा पश्यत्यन्यमीशमस्य महिमानमिति वीतशोकः ॥ २ ॥

पदच्छेदः ।

समाने, वृक्षे, पुरुषः, निमग्नः, अनीशया, शोचति, मुह्यमानः, जुष्टम्, यदा, पश्यति, अन्यम्, ईशम्, अस्य, महिमानम, इति, वीतशोकः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
समाने	पूर्वोक्त एकही
वृक्षे	शरीररूपी वृक्ष विषे
निमग्नः	विषयस्वाद में डूबाहुआ
पुरुषः	अविद्या आधीन जीव आत्मा
मुह्यमानः	अविवेकसे मोहको प्राप्त होता हुआ
अनीशया	इष्टानिष्टफल की प्राप्तिविषे अपनी असमर्थतासे
शोचति	शोक करता है

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
परंतु	परंतु
यदा	जब
ईशस्य	ईश्वर के
महिमानम्	योगऐश्वर्य को
यत्	जोकि
जुष्टम्	योगियों करके सेवन किया गया है
अन्यम्	विलक्षण
पश्यति	देखताहै
इति	तब
वीतशोकः	शोकरहित
+ भवति	होताहै

नोट—ईश्वर विलक्षण है याने अकर्ता और अभोक्ता हुआ भी कर्ता और भोक्ता उपाधि के सम्बन्ध से प्रतीत होता है—

मूलम् ।

यदा पश्यः पश्यते रुक्मवर्णं कर्तारमीशं पुरुषं ब्रह्मयोनिं तदा विद्वान्पुण्यपापे विधूय निरंजनः परमं साम्यमुपैति ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ।

यदा, पश्यः, पश्यते, रुक्मवर्णम्, कर्तारम्, ईशम्, पुरुषम्, ब्रह्मयोनिम्, तदा, विद्वान्, पुण्यपापे, विधूय, निरञ्जनः, परमम्, साम्यम्, उपैति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यदा=जब		पश्यते=पश्यति=देखता है	
पश्यः=पूर्वोक्त प्रकार ईश्वर के ऐश्वर्य को देखने वाला यह जीवात्मा		तदा=तब	
कर्तारम्=सबका कर्ता		+ सः=वह	
ईशम्=सबका ईश्वर		विद्वान्=ज्ञानीपुरुष	
ब्रह्मयोनिम्=हिरण्यगर्भ का भी उत्पत्तिस्थान		पुण्यपापे=पुण्य और पाप दोनों कर्मों को	
रुक्मवर्णम्=स्वयंप्रकाश		विधूय=दग्ध कर के	
पुरुषम्=परमपुरुष को		निरञ्जनः=माया मल से निर्मल होता हुआ	
		परमम्=उत्कृष्ट	
		साम्यम्=अद्वैतरूप समता को	
		उपैति=प्राप्त होता है	

मूलम् ।

प्राणो ह्येष यः सर्वभूतैर्विभाति विजानन् विद्वान् भवते नातिवादी आत्मक्रीड आत्मरतिः क्रियावानेष ब्रह्मविदां वरिष्ठः ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ।

प्राणः, हि, एषः, यः, सर्वभूतैः, विभाति, विजानन्, विद्वान्, भवते, न, अतिवादी, आत्मक्रीडः, आत्मरतिः, क्रियावान्, एषः, ब्रह्मविदाम्, वरिष्ठः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यः=जो परम ईश्वर		प्राणः=प्राणका भी प्राण है	
हि=निश्चय करके		एषः=वही	

सर्वभूतैः= { ब्रह्मा से लेकर तृणपर्यंत सब भूतों के बाह्या-भ्यंतर व्याप्य व्यापक भाव करके }

विभाति=अनेक प्रकार से भासमान होरहा है

ईदृशंईश्वरम्=ऐसे ईश्वर को

विजानन्='अहंब्रह्मास्मि' इस भावसे जानताहुआ

सः=वह

विद्वान्=विद्वान् कि

आत्मक्रीडा=आत्मा में ही है क्रीडा जिसकी

आत्मरतिः=आत्माही विषे है प्रीति जिसकी

+च=और

क्रियावान्= { ज्ञान ध्यान वैराग्यादिकों से संपन्न है जो }

अतिवादि=द्वैतवादी

न=नहीं

भवते=भवति=होता है

+किन्तु=किंतु

एषः=वह

ब्रह्मविदाम्=ब्रह्मवेत्ताके मध्य विषे

वरिष्ठः=श्रेष्ठ

भवति=होता है

मूलम् ।

सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्य्येण नित्यम् । अंतःशरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रोयं पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ।

सत्येन, लभ्यः, तपसा, हि, एषः, आत्मा, सम्यक्, ज्ञानेन, ब्रह्मचर्य्येण, नित्यम्, अन्तःशरीरे, ज्योतिर्मयः, हि, शुभ्रः, अयम्, पश्यन्ति, यतयः, क्षीणदोषाः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
नित्यम्	नित्य
सत्येन	सत्य वचन और सत्य आचरण करके
तपसाहि	इन्द्रिय और मन की एकाग्रतारूपी तप करके
सम्यक्ज्ञानेन	यथार्थपरिपूर्णज्ञानकरके

ब्रह्मचर्य्येण=नित्य ब्रह्मचर्य करके
एषः=यह पूर्वोक्त
आत्मा=परमात्मा
लभ्यः=प्राप्त होने योग्य है
+ च=और
हि=निश्चय करके
अयम्=यह परमात्मा
शुभ्रः=शुद्ध
ज्योतिर्मयः=स्वयं प्रकाशमान
अन्तःशरीरे=हृदयाकाश विषे
वर्तते=वर्तमान है
तम्=उस परमात्मा को
क्षीणदोषाः=दोषरहित
यतयः=तीक्ष्ण व्रत धारण करनेवाले यतिलोक
पश्यन्ति=आत्मभाव से देखते हैं

मूलम् ।

सत्यमेव जयति नानृतं सत्येन पंथा विततो देवयानः येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा यत्र तत्सत्यस्य परमं निधानम् ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ।

सत्यम्, एव, जयते, न, अनृतम्, सत्येन, पन्थाः, विततः, देवयानः, येन, आक्रमति, ऋषयः, हि, आप्तकामाः, यत्र, तत्, सत्यस्य, परमम्, निधानम् ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

देवयानः=स्वर्ग आदि लोकों का
पन्थाः=मार्ग
सत्येन=सत्यही करके
विततः=व्याप्त है
येन=जिस मार्ग द्वारा
आप्तकामाः=तृष्णारहित
ऋषयः=सत्यदर्शी ऋषीश्वर आदि
तम्=उस लोक को
आक्रमन्ति=प्राप्त होते हैं
+ च=और
यत्र=जहां

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

सत्यस्य=सत्य का
निधानम्=निधान है
तत्=वही
परम्=परब्रह्म है
+ अस्मात्=इस वेद प्रमाण से
सत्यम्=सत्य पुरुष
जयते=जयति=जयको पाता है
अनृतम्=मायावी पुरुष
हि=कभी
न=नहीं
+ जयति=जय को प्राप्त होता है

मूलम् ।

बृहच्च तद् दिव्यमचिंत्यरूपं सूक्ष्माच्च तत् सूक्ष्मतरं विभाति दूरात्सुदूरे तदिहान्तिके च पश्यत्स्विहैव निहितं गुहायाम् ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ।

बृहत्, च, तत्, दिव्यम्, अचिन्त्यरूपम्, सूक्ष्मात्, च, तत्, सूक्ष्मतरम्, विभाति, दूरात्, सुदूरे, तत्, इह, अन्तिके, च, पश्यत्सु, इह, एव, निहितम्, गुहायाम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
च	और
तत्	वह ब्रह्म
बृहत्	सर्वव्यापी होने के कारण सबसे बड़ा है
दिव्यम्	स्वयं प्रकाश है
अचिंत्यरूपं	मनबुद्धि करके भी अचिंत्य है
च तत्	और वह
सूक्ष्मात्	आकाश आदि सूक्ष्म से भी
सूक्ष्मतरम्	अतिसूक्ष्म है
इह	इस जगत् विषे
विभाति	सूर्य चन्द्र आदि रूप से अनेक प्रकारका भासता है
च	और
तत्	वह
दूरात्सुदूरे	अविद्वानों को दूर से भी दूर है
+ च	और
पश्यत्सु	विद्वानों को
इह	इसी देह के
अन्तिके	समीप
एव	ही
गुहायाम्	बुद्धिरूपी गुहा विषे
निहितम्	स्थित है

मूलम् ।

न चक्षुषा गृह्यते नापि वाचा नान्यैर्देवैस्तपसा कर्मणा वा ज्ञानप्रसादेन विशुद्धसत्त्वस्ततस्तु तं पश्यते निष्कलं ध्यायमानः ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ।

न, चक्षुषा, गृह्यते, न, अपि, वाचा, न, अन्यैः, देवैः, तपसा,

कर्मणा, वा, ज्ञानप्रसादेन, विशुद्धसत्त्वः, ततः, तु, तम, पश्यते, निष्कलम्, ध्यायमानः ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः=वह ईश्वर	अपि=भी
चक्षुपा=चक्षु करके	न=नहीं
न=नहीं	गृह्यते=ग्रहण किया जासक्ता है
गृह्यते=ग्रहण किया जासक्ता है	वा=परन्तु
वाचा=वाणी करके	ज्ञानप्रसादेन=ज्ञान के प्रसाद से
न=नहीं	विशुद्धसत्त्वः=अतिशुद्ध हुआ है अन्तःकरण जिसका ऐसा पुरुष
गृह्यते=ग्रहण किया जासक्ता है	ध्यायमानः=मनन करता हुआ
च=और	ततः=तदनन्तर
अन्यैः=अन्य	तम्=उस
देवैः=इन्द्रियों करके	निष्कलं=प्राणादि कलारहित परमात्मा को
न=नहीं	तु=अवश्य
गृह्यते=ग्रहण किया जासक्ता है	पश्यते=पश्यति=देखता है
तपसा=तप करके	
च=और	
कर्मणा=अग्निहोत्रादि कर्मकरके	

मूलम् ।

एषोऽणुरात्मा चेतसा वेदितव्यो यस्मिन् प्राणः पंचधा संविवेश प्राणैश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां यस्मिन्विशुद्धे विभवत्येप आत्मा ॥९॥

पदच्छेदः ।

एषः, अणुः आत्मा, चेतसा, वेदितव्यः, यस्मिन्, प्राणः, पंचधा, संविवेश, प्राणैः, चित्तम्, सर्वम्, ओतम्, प्रजानाम्, यस्मिन्, विशुद्धे, विभवति, एषः, आत्मा ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यस्मिन्=	जिस शरीर विषे	ओतम्=	व्याप्त है
प्राणः=	प्राण	च=	और
पञ्चधा=	पांच प्रकार का होकर	यस्मिन्=	जिस
संविवेश=	दुग्ध विषे घृतवत् और काष्ठ विषे अग्निवत् सम्यक् प्रकार प्रविष्ट हैं	विशुद्धे=	निर्मल अंतःकरण विषे
+ च=	और	एषः=	यह पूर्वोक्त
+ यस्मिन्=	जिस शरीर विषे	आत्मा=	ईश्वर
प्राणैः=	प्राण और इन्द्रियों के साथ	विभवति=	प्रकाशमान है
प्रजानाम्=	लोकों का	एषः=	वही
सर्वम्=	संपूर्ण	अणुः=	सूक्ष्म से भी सूक्ष्म और प्राणका भी प्राण
चित्तम्=	अंतःकरण	आत्मा=	चैतन्यरूप आत्मा
		चेतसा=	चित्तद्वारा
		वेदितव्यः=	जानने योग्य है

मूलम् ।

यं यं लोकं मनसा संविभाति विशुद्धसत्त्वः कामयते यांश्च कामान् । तं तं लोकं जायते तांश्च कामांस्तस्मादात्मज्ञं ह्यर्चयेद्भूतिकामः ॥ १० ॥

पदच्छेदः ।

यम्, यम्, लोकम्, मनसा, संविभाति, विशुद्धसत्त्वः, कामयते, यान्, च, कामान्, तम्, तम्, लोकम्, जायते, तान्, च, कामान्, तस्मात्, आत्मज्ञम्, हि, अर्चयेत्, भूतिकामः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
विशुद्धसत्त्वः=	पूर्वोक्त प्रकार से निर्मल अंतःकरण द्वारा आत्मज्ञानी पुरुष	मनसा=	चित्त करके
		यम्=	जिस
		यम्=	जिस
		लोकम्=	स्वर्गादिलोक को

संविभाति=अपने निमित्त या दूसरे के निमित्त संकल्प करता है
च=और
यान्=जिन
कामान्=कामनाओं को
कामयते=इच्छा करता है
तम् तम्=उस उस
लोकम्=लोकको
च तान्=और उन उन
कामान्=कामनाओं को
जायते=प्राप्त होता है
तस्मात्=इसलिये
भूतिकामः=आत्मश्रेय चाहनेवाला पुरुष
आत्मज्ञम्=आत्मज्ञानी को
हि=निश्चय करके
अर्चयेत्=सत्कार शुश्रूषा नमस्कार आदि से पूजा करै

इति तृतीयमुण्डके प्रथमः खण्डः ॥

मूलम् ।

स वेदैतत्परमं ब्रह्म धाम यत्र विश्वं निहितं भाति शुभ्रम् ।
उपासते पुरुषं ये ह्यकामास्ते शुक्रमेतदतिवर्तन्ति धीराः ॥ १ ॥

पदच्छेदः ।

सः, वेद, एतत्, परमम्, ब्रह्म, धाम, यत्र, विश्वम्, निहितम्, भाति, शुभ्रम्, उपासते, पुरुषम्, ये, हि, अकामाः, ते, शुक्रम्, एतत्, अतिवर्तन्ति, धीराः ॥

अन्वयः — पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

यत्र=जिस ब्रह्म विषे
विश्वम्=समस्त जगत्
निहितम्=ओतप्रोत है
च=और
यत्=जो
ब्रह्म=ब्रह्म

अन्वयः — पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

परमम्=सर्वोत्कृष्ट
धाम=सबका आश्रयस्थान
शुभ्रम्=शुद्ध
च=और
भाति=स्वयंप्रकाश है
एतत्=उसको

स:= { वह पूर्वोक्त शुद्ध अन्तःकरणवाला आत्मज्ञानी पुरुष

वेद= { जानता है और उसी के तद्रूप होता है

ये=जो

धीराः=विवेकीजन

ईदृशम्=ऐसे

पुरुषम्=ज्ञानी पुरुष को

अकामाः=निष्काम होते हुये

उपासते=उपासना करते हैं

ते=वे

एतत्=इस प्रसिद्ध

शुक्रम्= { वीर्यको जो कि शरीरान्तर का उपादान कारण है

अतिवर्तन्ति= { उल्लंघन कर जाते हैं याने वीर्य्यद्वारा फिर गर्भवास विषे नहीं प्राप्त होते हैं

मूलम् ।

कामान् यः कामयते मन्यमानः सकामभिर्जायते तत्र तत्र पर्याप्तकामस्य कृतात्मनस्तु इहैव सर्वे प्रविलीयन्ति कामाः ॥ २ ॥

पदच्छेदः ।

कामान्, यः, कामयते, मन्यमानः, सः, कामभिः, जायते, तत्र, तत्र, पर्याप्तकामस्य, कृतात्मनः, तु, इह, एव, सर्वे, प्रविलीयन्ति, कामाः ॥

अन्वयः — पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

यः=जो मुमुक्षु

कामान्=दृष्ट अदृष्ट विषयों के कामनाओं को

मन्यमानः=स्मरण करता हुआ

कामयते=भोग करने की इच्छा करता है

सः=वह

अन्वयः — पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

कामभिः=अपनी कामनों की वासना करके

तत्रतत्र=अनेक लोकों या योनियों विषे

जायते= { प्राप्त होता है यानी जन्म मरण भाव से मुक्त नहीं होता है

च=और

तु=इसके विपरीत

कृतात्मनः=कृतकृत्य हुआ है आत्मा जिसका याने अपना आत्माही परमात्मा भास रहा है जिस को ऐसे

पर्याप्तकामस्य=परिपूर्णकाम को प्राप्तहुये निष्काम मुमुक्षु के

सर्वे=सम्पूर्ण

कामाः=कामना

इह=इसी शरीर विषे

एव=ही

प्रविलीयन्ति=लीन होजाते हैं यानी वह जीवन्मुक्त होकर क्लेशों से रहित होजाता है

मूलम् ।

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूं स्वाम् ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ।

न, अयम्, आत्मा, प्रवचनेन, लभ्यः, न, मेधया, न, बहुना, श्रुतेन, यम्, एव, एषः वृणुते, तेन, लभ्यः, तस्य, एषः, आत्मा, विवृणुते, तनूम्, स्वाम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अयम्	यह
आत्मा	परमात्मा
न	न
प्रवचनेन	वेद और शास्त्र के अध्ययन से
न	न
मेधया	ग्रन्थधारण समर्थबुद्धि से
न	न
बहुना	बहुत
श्रुतेन	श्रवण करने से
लभ्यः	प्राप्त होने योग्य है
+ यदा	जब
एषः	यह विद्वान् मुमुक्षु
यम्	जिस परमात्माको
विवृणुते	अभेद दृष्टि करके प्राप्त होनेकी इच्छा करता है
एषः	वह
आत्मा	परमात्मा
अपि	भी
तस्य	उस विद्वान् के निमित्त

स्वाम्=अपने	तेन=उस अभेद परस्पर संबंध से
तनूम्=शरीर को	सः=यह परमात्मा
वृणुते=प्रकाश करता है	एव=निश्चय करके
+ तदा=तब	लभ्यः=प्राप्त होने योग्य है

मूलम् ।

नायमात्मा बलहीनेन लभ्यो न च प्रमादात्तपसो वाप्यलिंगात् एतैरुपायैर्यतते यस्तु विद्वांस्तस्यैष आत्मा विशते ब्रह्म धाम ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ।

न, अयम्, आत्मा, बलहीनेन, लभ्यः, न, च, प्रमादात्, तपसः, वा, अपि, अलिंगात्, एतैः, उपायैः, यतते, यः, तु, विद्वान्, तस्य, एषः, आत्मा, विशते, ब्रह्म, धाम ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
न=न		विद्वान्=ब्रह्मनिष्ठ	
बलहीनेन=ब्रह्मविषे निष्ठारूपी बलहीन पुरुष से		एतैः=इन	
च=और		+ चतुर्भिः=चारों	
न=न		उपायैः=उपायों से याने बल अप्रमाद त्यागऔरज्ञानसे	
प्रमादात्=विषयसंग के प्रमाद से		यतते=उसकी प्राप्तिके साधनों में यत्न करता है	
वा=और		तस्य=उसका	
न=न		एषः=यह	
अलिंगात्=संन्यासरहित		आत्मा=जीवात्मा	
तपसः=ज्ञान से		धाम=सर्व का आश्रय	
अयम्=यह		ब्रह्म=ब्रह्मविषे	
आत्मा=परमात्मा		विशते=प्रवेश करता है याने उसका आत्मा परमात्मा के साथ तन्मय होजाता है	
अपि=कभी			
लभ्यः=प्राप्त होने योग्य है			
तु=परन्तु			
यः=जो			

मूलम् ।

संप्राप्यैनमृषयो ज्ञानतृप्ताः कृतात्मानो वीतरागाः प्रशान्ताः ते सर्वगं सर्वतः प्राप्य धीरा युक्तात्मानः सर्वमेवाविशन्ति ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ।

सम्प्राप्य, एनम्, ऋषयः, ज्ञानतृप्ताः, कृतात्मानः, वीतरागाः, प्रशान्ताः, ते, सर्वगम्, सर्वतः, प्राप्य, धीराः, युक्तात्मानः, सर्वम्, एव, आविशन्ति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
युक्तात्मानः=	योग विषे आरूढ है चित्त जिन का
धीराः=	अत्यन्त है विवेक जिनको
कृतात्मानः=	कृतार्थ किया है याने अपने आत्मा को, परमात्मा सन्मुख है जिन्हों ने
वीतरागाः=	दूर होगया है विषयों में राग जिन का
शान्तात्मा=	शान्त हुये हैं मन आदि इन्द्रियां जिन के
ज्ञानतृप्ताः=	आत्मज्ञान से परिपूर्ण हैं जे
ते=	वे
एनम्=	उस
सर्वगम्=	सर्वव्यापी परमात्मा को
सर्वतः=	सब ओर से
सम्प्राप्य=	सम्यक् प्रकार प्राप्त होके
च=	और
+देहावसानम्=	देहावसान को
प्राप्य=	पाकर
सर्वम्=	समस्त विश्व विषे
एव=	निश्चयपूर्वक
आविशन्ति=	सर्वात्मभाव से प्रविष्ट होते हैं

मूलम् ।

वेदांतविज्ञानसुनिश्चितार्थाः संन्यासयोगाद्यतयः शुद्धसत्त्वाः ते ब्रह्मलोकेषु परान्तकाले परामृताः परिमुच्यन्ति सर्वे ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ।

वेदान्तविज्ञानसुनिश्चितार्थाः, संन्यासयोगात्, यतयः, शुद्धसत्त्वाः, ते, ब्रह्मलोकेषु, परान्तकाले, परामृताः, परिमुच्यन्ति, सर्वे ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
संन्यासयोगात्	सब कर्मों के त्यागरूपी योग से
शुद्धसत्त्वाः	शुद्ध हुआ है अन्तःकरण जिनका
च	और
वेदान्तविज्ञानसुनिश्चितार्थाः	वेदान्त के विचार से उत्पन्न हुये आत्मज्ञान विषे है निश्चय जिन को ऐसे

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ते	वे
सर्वे	सब
परामृताः	जीवन्मुक्त होते हुये
यतयः	यतीलोक
परान्तकाले	देहके त्यागनेपर
ब्रह्मलोकेषु	ब्रह्म विषे
परिमुच्यन्ति	मुक्त होजाते हैं

मूलम् ।

गताः कलाः पंचदश प्रतिष्ठा देवाश्च सर्वे प्रतिदेवतासु कर्माणि विज्ञानमयश्च आत्मा परेऽव्यये सर्व एकीभवन्ति ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ।

गताः, कलाः, पञ्चदश, प्रतिष्ठाः, देवाः, च, सर्वे, प्रतिदेवतासु, कर्माणि, विज्ञानमयः, च, आत्मा, परे, अव्यये, सर्वे, एकीभवन्ति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
मोक्षकाले	मोक्षकाल विषे
पञ्चदश	देहकी उत्पत्ति के कारण प्राणादि पंद्रह
कलाः	कला
प्रतिष्ठाः	अपने अपने कारणों को
गताः	प्राप्त होते हुये
च	और
सर्वे	चक्षुरादि इन्द्रियों विषे स्थित हुये सब

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
देवाः	देवता
प्रतिदेवतासु	अपने कारण आदित्यादि देवताओं विषे
गताः	प्राप्त होते हुये
च	और
कर्माणि	संपूर्ण कर्म और उनके संस्कार
च	और
विज्ञानमयः	चिदाभास विशिष्ट
आत्मा	बुद्धि

एते=ये	परे=परमात्मा विषे
सर्वे=सब	एकीभवन्ति=एकताको प्राप्त होते हैं
अव्यये=अविनाशी	

मूलम् ।

यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रेऽस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय तथा विद्वान्नामरूपाद्विमुक्तः परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यम् ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ।

यथा, नद्यः, स्यन्दमानाः, समुद्रे, अस्तं, गच्छन्ति, नामरूपे, विहाय, तथा, विद्वान्, नामरूपात्, विमुक्तः, परात्परम्, पुरुषम्, उपैति, दिव्यम् ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यथा=जैसे	तथा=तैसे ही
स्यन्दमानाः=बहती हुई	विद्वान्=ज्ञानी विद्वान्
नद्यः=नदियां	नामरूपात्=नाम और रूप दोनों से
समुद्रे=समुद्रविषे	विमुक्तः=रहित होता हुआ
नामरूपे=नाम और रूप दोनों को	दिव्यम्=प्रकाशमान
विहाय=त्याग के	परात्परम्=अविनाशी
अस्तम्=अभाव को	पुरुषम्=पुरुष यानी ब्रह्म को
गच्छन्ति=प्राप्त होती हैं	उपैति=प्राप्त होता है

मूलम् ।

स यो ह वै तत्परमं ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवति नास्याब्रह्मवित्कुले भवति तरति शोकं तरति पाप्मानं गुहाग्रंथिभ्यो विमुक्तोऽमृतो भवति ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ।

सः, यः, ह, वै, तत्, परमम्, ब्रह्म, वेद, ब्रह्म, एव, भवति,

न, अस्य, अब्रह्मवित्, कुले, भवति, तरति, शोकम्, तरति, पाप्मानम्, गुहाग्रन्थिभ्यः, विमुक्तः, अमृतः, भवति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ह वै	निश्चय करके	पाप्मानम्	धर्म और अधर्म दोनों से
यः	जो कोई	तरति	छूट जाता है
तत्	उस	च	और
परमम्	परम	गुहाग्रन्थिभ्यः	हृदय की संशय रूप ग्रन्थियों से
ब्रह्म	ब्रह्म को	विमुक्तः	छूटा हुआ
वेद	अहं ब्रह्माऽस्मि भाव से जानता है	अमृतः	मरणधर्मरहित
सः	वह	भवति	होता है
ब्रह्म	ब्रह्म	अस्य	उस विद्वान् के
एव	ही	कुले	कुल विषे
भवति	होता है	अब्रह्मवित्	ब्रह्मका न जानने वाला कोई
च	और	न	नहीं
शोकम्	शोक याने मन के संताप से	भवति	होता है
तरति	उत्तीर्ण होता है		

मूलम् ।

तदेतदृचाऽभ्युक्तं क्रियावन्तः श्रोत्रिया ब्रह्मनिष्ठाः स्वयं जुह्वत एकर्षिं श्रद्धयंतस्तेषामेवैतां ब्रह्मविद्यां वदेत शिरोव्रतं विधिवद्यैस्तु चीर्णम् ॥ १० ॥

पदच्छेदः ।

तत्, एतत्, ऋचा, अभ्युक्तम्, क्रियावन्तः, श्रोत्रियाः, ब्रह्मनिष्ठाः, स्वयम्, जुह्वते, एकर्षिम्, श्रद्धयन्तः, तेषाम्, एव, एताम्, ब्रह्मविद्याम्, वदेत, शिरोव्रतम्, विधिवत्, यैः, तु, चीर्णम् ॥

अन्वयः	पदार्थ सहित सूक्ष्म भावार्थ
+ ये	जो
क्रियावंतः	यथोक्त कर्म के अनुष्ठान करने वाले हैं
श्रोत्रियाः	वेद वेदांग पारंगत हैं
ब्रह्मनिष्ठाः	परब्रह्म के ज्ञान में तत्पर हैं
श्रद्धयन्तः	श्रद्धावान् हैं
च	और
स्वयम्	अपने चिपे
एकर्षिम्	एकर्षि नामक अग्नि को
जुह्वते	जुह्वति=उपासते हैं
तु	और
यैः	जिनों करके

अन्वयः	पदार्थ सहित सूक्ष्म भावार्थ
शिरोव्रतम्	शिरोव्रत
विधिवत्	यथा विधान
चीर्णम्	धारण किया गया है
तेषाम्	ऐसे मुमुक्षुवों के अर्थ
एताम्	इस
ब्रह्मविद्याम्	ब्रह्मविद्या को
+ गुरुः	गुरु
एव	अवश्य
वदेत्	उपदेश करे
तत्	इस प्रकार
एतत्	इस ब्रह्मविद्याके संप्रदायका विधान
ऋचा	मन्त्र करके
अभ्युक्तम्	प्रकाशित किया गया है

नोट—शिरोव्रत एक व्रत है जिसकी उपासना के बल से अथर्ववेदवाले अपने शरीराग्निको मस्तकगत करलेते हैं ॥

मूलम् ।

तदेतत्सत्यमृषिरंगिराः पुरोवाच नैतदचीर्णव्रतोऽधीते नमः परमऋषिभ्यो नमः परमऋषिभ्यः ॥ ११ ॥

पदच्छेदः ।

तत्, एतत्, सत्यम्, ऋषिः, अङ्गिराः, पुरा, उवाच, न, एतत्, अचीर्णव्रतः, अधीते, नमः, परमऋषिभ्यः, नमः, परमऋषिभ्यः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तत्	इस प्रकार
एतत्	इस

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सत्यम्	सत्य अविनाशी पुरुष को

अङ्गिराः=अंगिरानामक
ऋषिः=ऋषि
पुरा=पहले
उवाच=शौनक ऋषि के अर्थ कहता भया
एतत्=इस सत्यबोधक शास्त्र को
अचीर्णव्रतः=व्रतरहित पुरुष
न अधीते=अध्ययन करने के योग्य नहीं है
नमःपरमऋषिभ्यः=विद्यासंप्रदाय के चलानेवाले जो ब्रह्माआदि ऋषीश्वर हैं उनके अर्थ नमस्कार है
नमः परमऋषिभ्यः=परमऋषियों के अर्थ नमस्कार है

नोट—द्वितीय वार नमस्कार अत्यन्त आदरके अर्थ और उपनिषत् की समाप्तिके अर्थ है ॥

इति तृतीयमुण्डके द्वितीयः खण्डः ।
समाप्ता मुण्डकोपनिषत्

ॐ हरिः ॐम्